राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
छत्तीसगढ़

राज्य स्तरीय आकलन

विश्लेषण आधारित

प्रशिक्षण माड्यूल

सत्र – 2019–20

हिन्दी

प्राथमिक

मार्गदर्शक

पी. दयानंद (IAS)

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, छ.ग., शंकरनगर, रायपुर

डॉ. सुनीता जैन

अतिरिक्त संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, छ.ग., शंकरनगर, रायपुर

आकलन प्रभारी

अनुपमा नलगुंडवार

समन्वयक

डॉ. विद्यावती चंद्राकर, डेकेश्वर प्रसाद वर्मा

सामग्री निर्माण

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर, डॉ. जयभारती चन्द्राकर, रीता श्रीवास्तव, डेकेश्वर वर्मा

तकनीकी सहयोग

आई संध्यारानी, संतोष कुमार तंबोली, कुशाग्र चौबे, दिवाकर निमजे

आवरण पृष्ठ

सुधीर कुमार वैष्णव

ले–आउट

कुन्दन लाल साहू

टंकण

लक्ष्मीकांत सेन

आमुख

हिन्दी भाषा शिक्षण का स्कूली शिक्षा में एक अहम स्थान हैं। सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से सबद्ध सभी लोगों के लिए भाषा संवाद का माध्यम हैं। राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद का उद्देश्य बच्चों को हिंदी भाषा का पूर्ण ज्ञान, स्वतंत्र व जिज्ञासु पाठक बनाना है।

कक्षा 1 से 5 तक पढ़ने वाले बच्चे अपने आस पास के जीवन के बारे में सोचना व समझना शुरू कर देते हैं। इस समझ को पैदा करने के लिए आवश्यक शब्दावली, वाक्य संरचना, तार्किक, क्रमबद्धता का बड़ा हिस्सा भाषा की कक्षा से ही उसे मिलेगा। हिंदी भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य जैसे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान, भाषा प्रयोग तथा सृजनात्मकता का विकास की पूर्ति इस शिक्षण से किया गया है।

हमने गतिविधियों पर काफी बल दिया है। प्रत्येक पाठ को पढ़कर विद्यार्थी परस्पर मौखिक प्रश्न पूछे और उनके उत्तर दे। इससे विद्यार्थियों में प्रश्न गढ़ने की कला विकसित होगी और पाठों के प्रति उनकी समझ विकसित होगी। विद्यार्थियों के परस्पर प्रश्नोंत्तर के बाद आप भी कुछ मौखिक प्रश्न पूछें। इससे आपकों भी यह परीक्षण करने का अवसर मिलेगा कि विद्यार्थी पाठ को आत्मसाव कर पाए हैं या नहीं।

यह आवश्यक हो गया है कि प्रत्येक बच्चे के नजरिये से शिक्षा व्यवस्था का विश्लेषण किया जाए। इस विश्लेषण से उपजे परिणाम विकास का रास्ता तय करने में हमारी मदद करेंगे। इस दिशा में सार्थक प्रयास भी किए जा रहे हैं। विषस के मॉड्यूल का निर्माण किया जा रहा हैं। इस मॉड्यूल में बच्चों की समझ को बेहतर बनाने के लिए कक्षा वार पाठ योजनाएँ एवं सुझावात्मक कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। जिससे बच्चों के भाषा दिवस पर विवेचनात्मक चिंतन को बढ़ावा दिया जा सकें तथा ज्ञान प्राप्ति में बिना किसी दबाव के विद्यार्थियों और शिक्षको की भागीदारी हो। ऐसी सहजता तथा सहभागिता के द्वारा ही विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए यह मॉड्यूल रूचिपूर्ण और आनंददायक बनाया गया है।

इसी क्रम में यह शैक्षिक सामग्री आपको सौंपी जा रही है। विश्वास है कि बच्चों में विभिन्न कुशलताओं का विकास करने में यह सामग्री आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

दिसम्बर 2019

रायपुर

पी.दयानंद IAS
संचालक
एस.सी.ई.आर.टी.,छ.ग.

हिन्दी – प्रशिक्षण फ्रेमवर्क

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृ. क्र.
हिंदी भाषा अध्ययन : प्रकृति एवं महत्व	1-7
पहला दिन :	8- 26
• चित्ताकर्षण (Ice Breaker) गतिविधि	8
• पारंपरिक योग्यता आधारित ढाँचे में जाने में परिवर्तन	11
• प्रादर्श पाठ योजना	14
• Task Distribution Matrix- TDM पर चर्चा	18
• रूब्रिक्स क्या है?	19
• **SA1 – Hindi – Class 5**	20
दूसरा दिन :	27-37
• मूल्यांकन रचनात्मक → सावधिक → योगात्मक आकलन	27
• एफ.ए. और एस.ए. गुण निर्दिष्ट करना	32
तीसरा दिन :	38-40
• **Transectional Pedagogy and use of Manipulatives**	38
• **Demo lesson using Manipulatives/TLM**	39
चौथा दिन :	41-45
• उपचारात्मक शिक्षण	41
• कला समेकित शिक्षण	43
पाँचवा दिन :	46-65
• चित्ताकर्षण (Ice Breaker)	46
• पाठ योजना	47
• Low performing LOs पर आधारित गतिविधियाँ	48
परिशिष्ट	66-68

भाषा की प्रकृति

भाषा जीवन से जुड़ी है : भाषा हम सभी के जीवन में कुछ इस तरह रच–बस गई है कि उसकी 'उपस्थिति' के बारे में हमें जानकारी नहीं होती।

सभी मनुष्य विभिन्न उद्देश्यों के लिए भाषा का इस्तेमाल करते हैं। यहाँ तक कि विविध प्रकार की दिव्यांगता वाले बच्चे, जैसे– दृष्टिबाधित या श्रवणबाधित बच्चे भी संप्रेषण की जटिल और समृद्ध व्यवस्था का प्रयोग करते हैं।

भाषा–क्षमता : सभी बच्चे तीन साल की उम्र से पहले ही न केवल अपनी भाषा की बुनियादी संरचनाएँ और उपसंरचनाएँ सीख जाते हैं, बल्कि वे यह भी सीख जाते हैं कि विभिन्न परिस्थितियों में इनका किस प्रकार उचित प्रयोग करना है। उदाहरण के लिए वे केवल भाषिक दक्षता नहीं, बल्कि संप्रेषण की दक्षता भी सीखते हैं। उनमें सामाजिक व क्षेत्रीय विविधता देखने को मिलती है। इस तरह की भाषिक विविधता कक्षा में हमेशा उपस्थित रहती है और एक शिक्षक को उसकी जानकारी होनी चाहिए। साथ ही जहाँ तक संभव हो उसका सकारात्मक प्रयोग करना चाहिए ।

बोलना और लिखना : बोलने और लिखने में जो बुनियादी अंतर है वह यह है कि लिखित भाषा सचेत रूप से नियंत्रित रहती है तथा समय में स्थिर हो जाती है और हम जब चाहें तब उस पर वापस आ सकते हैं। मौखिक भाषा अपनी प्रवृति में क्षणिक और लिखित भाषा की तुलना में बहुत जल्दी बदलने वाली होती है।

भाषा, साहित्य और सौंदर्यबोध : संसार को उद्घाटित करने की विशेषता के अलावा भाषा के कई प्रकार्यात्मक तत्व हैं। कविता, गद्य और नाटक न केवल हमारी साहित्यिक संवेदनशीलता को परिष्कृत करते हैं बल्कि हमारे सौंदर्यबोध को भी समृद्ध बनाते हैं, विशेषरूप से पठन–अवबोधन एवं लिखित के उच्चारण को। साहित्य में चुटकुले, व्यंग्य, काल्पनिकता, कहानी, पैरोडी, दृष्टांत/नीति कथा भी शामिल हैं जो हमारी दिन–प्रतिदिन की बातचीत में शामिल होते हैं और उनका विस्तार करते हैं।

जन्मजात भाषा क्षमता : यहाँ यह भी ध्यान रखने की आवश्यकता है कि बच्चे जन्मजात भाषा–क्षमता के साथ पैदा होते हैं परंतु प्रत्येक भाषा विशेष प्रकार के सामाजिक–सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भ में अर्जित की जाती है। प्रत्येक बच्चा यह सीखता है कि क्या कहना है, किसे कहना है, कहाँ कहना है।

भाषा के महत्व

भाषा मनोगत भावों और विचारों को प्रगट करने का सर्वोत्तम साधन हैं। सबकी अपनी–अपनी अलग भाषाएँ हैं चाहे वह मानव हो, पशु–पक्षी हो, जानवर हो किंतु मानव मस्तिष्क की बोलने की प्रक्रिया में क्या महत्वपूर्ण भूमिका है ? भाषा का विकास कैसे हुआ? इसके बारे में क्या–क्या धारणाएँ है। भाषा किस तरह समाज को समझने में मदद करती है? बिना भाषा के संचार नहीं हैं। भाषा प्रतीकों का एक व्यवस्थित ढ़ांचा है। इस व्यवस्था में बने प्रतीकों का कुछ मान्य अर्थ होता है। इन प्रतीकों से

बनी भाषा द्वारा ही सांस्कृतिक विचार व धरोहर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संचारित होते है। भाषा के द्वारा समाज के लोग एक दूसरे से बातचीत कर सकते है। यह संस्कृति का एक अहम हिस्सा हैं। भाषा इंसान की मदद करती हैं कि वह एक दूसरें को बता सकें कि उनके क्या अनुभव रहे वे क्या अनुभव कर रहे है और उनकी भविष्य को लेकर क्या योजनाएँ हैं।

हिंदी भाषा शिक्षण का उद्देश्य

- ध्वनि रूपों में शुद्ध उच्चारण को समझना।
- शब्दों के शुद्ध उच्चारण को समझना।
- वर्ण पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- वर्णों और शब्दों को उचित आकार उचित क्रम में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विराम चिह्न का प्रयोग करते हुए लिखनें की क्षमता विकसित करना।
- वाक्य पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- व्याकरण का सटीक उपयोग।

इन उद्देश्यों को स्तरवार इस तरह से रेखांकित किया जा सकता है–

कक्षा – 1

सुनना, बोलना

- कविता/ कहानी/ विवरण हाव –भाव सहित सुना पाना।
- कविता/ कहानी/ विवरण सुनकर मौखिक प्रश्नों के उत्तर दे पाना।
- चित्रों पर विवरण सुना पाना।
- स्वतंत्र रूप से अपनी बात कह पाना।
- सरल मौखिक निर्देशों का पालन कर पाना।
- सुनी हुई बात पर अपना मत व्यक्त कर पाना।

पढ़ना, समझना

- परिचित शब्दों, नामों को कविता/कहानी/ श्यामपट्ट/ शब्द कार्ड आदि में पहचान पाना।
- शब्दों तथा छोटे–छोटे वाक्यों को प्रवाह में पढ़ पाना।
- अर्थ समझ कर पढ़ पाना।
- लगभग 10 अक्षर– प्रथम चरण / 20 अक्षर– द्वितीय चरण /4–5 को छोड़कर सभी अक्षर पहचान पाना– तृतीय चरण।
- दो मात्रा/तीन से पांच मात्रा/ सभी मात्राएं पहचान पाना।

लिखना

- अक्षर/ शब्द देख कर लिख पाना।
- अक्षर/ शब्द मन से लिख पाना।
- प्रश्नों को सुनकर/ पढ़कर छोटे–छोटे वाक्य में उत्तर लिख पाना।

अभिव्यक्ति

- देखकर चित्र बना पाना।
- कविता/ कहानी सुनकर उसके अनुसार चित्र बना पाना।
- स्वतंत्र चित्र बना पाना।
- कविता/ कहानी/ परिचित घटना/ स्थिति का अभिनय कर पाना।
- मिट्टी तथा आसपास के अन्य सामग्री से चीजें बना पाना।

कक्षा – 2

सुनना – सोचकर बोलना

- कविता/ कहानी अकेले या सामूहिक रूप से हाव–भाव सहित सुना पाना।
- कविता/ कहानी/ विवरण सुनकर एक या दो पूरे वाक्य में उत्तर दें पाना।
- सरल और छोटे निर्देश समझकर उनके अनुसार कार्य कर पाना।
- बोलते समय लिंग सामंजस्य का ध्यान रख पाना।
- दैनिक जीवन/ परिचय संदर्भों/ कक्षा की गतिविधियों का 2 से 4 वाक्यों में विवरण दे पाना।
- परिचित संदर्भों में हिंदी के 100/ 200 या 300 शब्दों का अर्थ समझकर उपयोग कर पाना।
- संबंधित प्रश्न पूछ पाना।
- अपनी बात कह पाना।
- हिंदी के शब्दों को सही ढंग से बोल पाना।

पढ़कर समझना – समझ व्यक्त करना

- कविता कहानी/ कार्ड/ चित्र में आए शब्दों को प्रभाव में पढ़ पाना।
- वर्ण पहचान कर उससे नए शब्द बनाना और पढ़ पाना।
- सभी वर्णों एवं मात्राओं से बनने वाले शब्द पढ़ पाना।
- पुस्तकालय की किताबों में से छोटी कहानी या कविता पढ़ पाना।

लिखना

- पढ़े हुए शब्दों या नामों को लिख पाना।
- बोले या सुने प्रश्नों का एक या दो वाक्य में उत्तर लिख पाना।
- स्वयं पढ़कर एक या दो वाक्य में उत्तर लिख पाना।
- सुनकर लिख पाना।
- दो तीन वाक्य में विवरण लिख पाना।

स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति

- परिचित परिस्थितियों का अभिनय कर पाना।
- स्वतंत्र चित्र बना पाना।
- आसपास की सामग्री से विभिन्न वस्तुएं बना पाना।
- मन से कल्पना करके कहानियाँ/ कविताएँ बना पाना।
- असमान वस्तुओं के बीच समानता और संबंध ढूंढ पाना।

कक्षा 3, 4, 5

सुनना, समझना एवं सोच कर बोलना

- कविता/ कहानी/ विवरण हाव–भाव एवं आवाज के उतार–चढ़ाव के साथ सुना पाना।
- क्या, कब, कहां, किससे, कैसे और क्यों वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में दे पाना।
- नाटक एवं संवाद सुनकर प्रमुख तत्व ग्रहण कर पाना।
- हिंदी के शब्दों को स्पष्ट उच्चारण के साथ प्रवाह में पढ़ पाना।
- बोलते समय लिंग, वचन का सामंजस्य रख पाना।
- हो रहे कार्य के संबंध में क्या, कब, कैसे, जैसे प्रश्न पूछ पाना।

पढ़कर समझना, समझकर व्यक्त करना

- एक बार में शब्द सामग्री को प्रवाह में पढ़ पाना।
- शब्दों को पढ़कर समझ पाना।
- छोटी सूचनाओं को पढ़कर समझ पाना।
- पढ़ी गई सामग्री के प्रमुख तत्व ग्रहण कर पाना।
- संदर्भ में आए नए शब्दों का अर्थ समझ कर उपयोग कर पाना।

लिखना

- क्यों, कब, कैसे वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में लिख पाना।
- शब्दों को उपयुक्त दूरी व सीधी लाइन में लिख पाना।
- अपरिचित शब्दों का श्रुटलेखन कर पाना।
- छोटा अनुच्छेद या विवरण लिख पाना।

स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति

- स्वतंत्र चित्र बना पाना।
- मिट्टी एवं आसपास की वस्तुओं से अलग – अलग चीजे बना पाना।
- किसी वस्तु का वर्णन कर पाना।
- मन से कहानी बनाना, आगे बढ़ा पाना।
- अपने आपको दूसरों की जगह रखकर उनका अभिनय कर पाना।
- किसी वस्तु के सामान्य उपयोग के अलावा अन्य उपयोग सोच पाना।

गतिविधि

भाषा शिक्षण के उद्देश्यों को पाठ्यपुस्तकों के संदर्भ में समझना

भाषा शिक्षण के उद्देश्यों के थोड़े गहराई से समझने और उस विषय पर संवाद करने की अवश्यकता है। इसी उद्देश्य से स्रोत व्यक्ति प्रतिभागियों को छोटे–छोटे समूह में विभाजित करेंगे और भाषा शिक्षण के विविध पहलुओं के संदर्भ में प्रतिभागियों के पूर्व अनुभवों को अपने छोटे समूह मे पहले वार्ता के स्तर पर फिर लिखित रूप में चार्ट पेपर पर रखने को, अवसर देंगे, जब प्रतिभागी यह कार्य संपन्न कर चुके होंगे तो उन्हे मॉड्यूल में उल्लेखित आलेख पढ़ने को देंगे, प्रतिभागियों के पढ़ने के बाद उन्हे पूर्व में प्रस्तुतीकरण के लिए तैयार चार्ट पेपर में अपनी नवीनतम जानकारी से अद्यतन करने को कहेंगे फिर बड़े समूह में प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया को समयबद्ध तरीके से नियोजित करेंगे।

आलेख को पढ़ने और इस विषय पर समूह चर्चा के लिए अवकाश देंगे जब चर्चा और पठन पूर्ण हो जाये तो प्रतिभागियों को कक्षा 1 से 5 की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक देंगे और उन्हे संकेत करेंगे कि वे इन पाठ्यपुस्तकों के किन्ही भी पाठ को चुनकर भाषा शिक्षण के उद्देश्यों के साथ संबंध बैठने की कोशिश करें और उसे समूह की ओर से प्रस्तुत करेंगे प्रतिभागियों का प्रयास यह होना चाहिए कि वे पुस्तक से विभिन्न विधाओं का चुनाव कर दिये भाषा शिक्षण के उद्देश्यों के साथ उनका मापन कर एक सामूहिक समझ बनाने का प्रयास करें।

पाठ्यचर्चा संबंधी अपेक्षाएँ

पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं को पूरे देश के बच्चों के ध्यान में रखकर (प्रथम भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले और द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले दोनों) तैयार किया गया है।

- किसी भी नई रचना/किताब को पढ़ने/समझने की जिज्ञासा व्यक्त करना।
- समाचार पत्रों/पत्रिकाओं में दी गई खबरों/बातों को जानना–समझना।
- विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति अपने रूझानों को अभिव्यक्त करना।
- पढ़ी–सुनी रचनाओं को जानना, समझना, व्याख्याता करना, अभिव्यक्त करना।
- अपने व दूसरों के अनुभवों को कहना–सुनना–पढ़ना–लिखना। (मौखिक–लिखित–सांकेतिक रूप में)
- अपने स्तरानुकूल दृश्य–श्रव्य माध्यमों की सामग्री (जैसे –बाल साहित्य, पत्र–पत्रिकाएँ टेलिविजन, कंम्प्यूटर–इंटरनेट,नाटक, सिनेमा आदि) पर अपनी राय व्यक्त करना।
- साहित्य की विभिन्न विधाओं (जैसे–कविता, कहानी, निबंध, एकांकी, संस्मरण, डायरी आदि) की समझ बनाना और उनका आनंद उठाना।
- दैनिक जीवन में औपचारिक–अनौपचारिक अवसरों पर उपयोग की जा रही भाषा की समझ बनाना।
- भाषा–साहित्य की विविध सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को समझना और सराहना करना।
- हिंदी भाषा में अभिव्यक्त बातों की तार्किक समझ बनाना।
- पाठ विशेष को समझना और उससें जुड़े मुद्दों पर अपनी राय देना।
- विभिन्न संदर्भों में प्रयुक्त भाषा की बारीकियों, भाषा की लय, तुक को समझना।
- भाषा की नियमबद्ध प्रकृति को पहचानना और विश्लेषण करना।
- भाषा का नए संदर्भों/परिस्थितियों में प्रयोग करना।
- अन्य विषयों, जैसे– विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि में प्रयुक्त भाषा की समुचित समझ बनाना व उसका प्रयोग करना।
- हिंदी भाषा–साहित्य को समझते हुए सामाजिक परिवेश के प्रति जागरूक होगा।
- दैनिक जीवन में तार्किक एवं वैज्ञानिक समझ की ओर बढ़ना।
  पढ़ी–लिखी–सुनी–देखी–समझी गई भाषा का सृजनशील प्रयोग।

प्रशिक्षण का उद्देश्य

हिंदी भाषा प्रशिक्षण का उद्देश्य हिंदी भाषा में गुणवत्ता लाना है ताकि हिंदी भाषा के पठन–पाठन में बच्चें दक्षता हासिल कर सकें। कक्षा में भाषा शिक्षण के उद्देश्य पूर्ण हो सके। बच्चों को खेल–खेल में विभिन्न गतिविधियों के द्वारा भाषाई दक्षता हासिल हो सके जिससे अध्ययन–अध्यापन की प्रक्रिया रोचकता पूर्ण हो सके। रोचक गतिविधियों के साथ स्वयं करके जब बच्चे आगे बढ़ेंगे तो अवश्य ही उनका आत्म विश्वास बढ़ेगा।

प्रमुख उद्देश्य

पाठ के विषय वस्तु को रूब्रिक्स के आधार से चार स्तरों पर बच्चों के लर्निंग आउटकम्स के द्वारा वर्णित क्षमताओं को विकसित करना है।

परिचय एवं पंजीयन सत्र

चित्ताकर्षण (Ice Breaker)

ICE Breaking & Introduction round

ICE Breaking मजेदार और रचनात्मक तरीके से एक–दूसरे को जानने और समझने का प्रयास करना है, जिससे कि कार्यशाला के समापन होने के बाद भी हम अपनी अपेक्षानुरूप पूरे विश्वास और संबंधों की गरिमा के साथ निरंतर एक दूसरे से अकादमिक सहयोग प्रप्त करने के लिए इच्छुक बने रहें।

- प्रक्रिया के लिए सामग्री – कोरा कागज, स्केच पेन
- प्रक्रिया के लिए 10 मिनट का समय निर्धारित है

- कक्षा के सभी प्रतिभागी स्रोत व्यक्ति के निर्देशों को ध्यान से सुनेंगे, समझेंगे
- स्रोत व्यक्ति उन्हे बताएँगे कि हर प्रतिभागी को कुछ पन्ने और स्केच पेन लेने हैं
- फिर कक्ष में उपस्थित अधिक से अधिक साथियों का चित्र (चेहरे को) 10 मिनट के निर्धारित समय में बनाना है। अनिवार्य शर्त है कि **चित्र बनाने वाले व्यक्ति के आखों में देखते हुये चित्र बनाना है कागज और पेन की ओर किसी भी कीमत पर नहीं देखना है।**
- 10 मिनट के पश्चात इस गतिविधि के उपरान्त प्रतिभागी अपने पूर्वनिर्धारित जगह पर बैठ जाएँगे

- स्रोत व्यक्ति पहले चरण में किन्ही 10 प्रतिभागियों को अपने नाम, पद एवं कार्यस्थान के विवरण के साथ–साथ बनाए गए चित्र में से किसी एक चित्र के साथ निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर के साथ तीन से पाँच मिनट में प्रस्तुत करने का मौका देंगे।
- प्रतिभागी परिचय सत्र को संचालित करने में सहयोग देंगे

प्रतिभागियों के लिए चित्र से जुड़े हुये प्रश्न –

- आपने चित्र के लिए इन्ही व्यक्ति का चुनाव क्यों किया ?
- आपके द्वारा बनाए गए अन्य चित्रों में से आपको यही चित्र अच्छा क्यों लगा ?
- इस गतिविधि को करते हुए कैसा लगा ?
- इस गतिविधि को करने में मुश्किल क्या था ?

- क्या आपको लगता है अगर उस व्यक्ति का नाम न बताएं तो इस चित्र के जरिए उनको पहचाना जा सकता है?
- क्या आपको लगता है कि हम जिनसे अधिक परिचित हैं उन्हे भाषा के इस रूप में बताना कितना मुश्किल है?

- स्रोत व्यक्ति हर चार पाँच प्रस्तुतीकरण के बाद उनका समेकन करेंगे यह देखेंगे कि समूह में से कितने लोगों ने उनके चित्र बनाए हैं अगर प्रतिभागियों ने उनके चित्र नहीं बनाए, तो क्या कारण थे? क्या वे उनको, प्रतिभागीगण अपने समूह का सदस्य नहीं मानते ? (10 प्रस्तुतीकरण के बाद इस सवाल को प्रतिभागियों के समक्ष अवश्य रखें)
- इसे थोड़ा रोचक बनाने के लिए प्रस्तुत कर रहे प्रतिभागी से अगले प्रतिभागी का नाम बताने को कहें ।
- सारा प्रस्तुतीकरण एक बार न होने दे चाय के बाद और पूर्व दिन के अंतिम चर्चा सत्र के बाद वाले सत्र में 8 से 10 लोगों के समूह में बाँट–बाँट कर परिचय का प्रस्तुतीकरण कराएं इससे पूरे दिन लोगों की उत्सुकता बनी रहेगी और मजा भी आता रहेगा

सारे प्रस्तुतीकरण के बाद एक जिज्ञासा रखें कि क्या हमें नहीं लगता कि जैसे हम जिन लोगों को अच्छे से जानते हैं उन्हे चित्र के माध्यम से पहचानने और बताने में अभी की गतिविधि में कठिनाई अनुभव किए, उसी तरह भाषा को लेकर कठिनाई का अनुभव हमे होता है क्या ? जिसे हम रोज बहुतायत रूप से व्यवहार में लाते हैं उसके बारे में बताते हुये बहुत कुछ छूटने लगता है, आखिर क्यों?

योग्यता आधारित ढांचे

बच्चे अपने आसपास के परिवेश में वहा के लोगों कि बोली–भाषा, आचार–विचार, रीति–रिवाज, विभिन्न संस्कृतियों से जुड़कर अवलोकन करते है और इन सभी के साथ अंतर्संबंध जोड़ते हैं। इस तरह कक्षा की सांस्कृतिक, सामाजिक, विविधता को शिक्षण प्रक्रिया में संबोधित करना एक चुनौती होती हैं चूँकि इस विषय के अन्तंर्गत बच्चों के स्वाभाविक ढँग से सीखने की प्रक्रिया (उनके अवलोकनों और निष्कर्षों) को सीखने का आधार बनाया जाता है। अतः आज शिक्षण या सीखने–सिखाने की प्रक्रिया बच्चों की क्षमताओं के विकास पर केन्द्रित हुई है।

आज शिक्षक–शिक्षा (Teacher Education) के कार्यक्रम में कुछ बदलाव आए है। आइए इस बदलाव पर चर्चा करने के लिए **एन.सी.एफ. 2005** पर नजर डाले – (पृष्ठ –122)

शिक्षक कक्षा में शिक्षण के लिए आवश्यक पूर्व तैयारी करें जिससे वे निम्न बिन्दुओं के संदर्भ में अपनी समझ विकसित कर सकें –

- बच्चों को उनके सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भों में समझ सकें।
- शिक्षक निरंतर सीखने वाले हों, उन्हें विद्यार्थी को शिक्षण प्रक्रिया के सक्रिय भागीदार के रूप में देखना चाहिए।

- शिक्षक की भूमिका ज्ञान के स्रोत के बदले एक सहायक की होनी चाहिए जो सूचना को ज्ञान/बोध में बदलने की प्रक्रिया में विविध उपायों से विद्यार्थियों को उनके शैक्षणिक लक्ष्यों की पूर्ति में मदद करें।
- एक महत्वपूर्ण तब्दीली ज्ञान की अवधारणा में आई है। ज्ञान को एक सतत् प्रक्रिया माना जाने लगा है। जो वास्तविक अनुभवों के अवलोकन, पुष्टिकरण आदि से उत्पन्न होता है।
- एक और बड़ा बदलाव शैक्षिक प्रक्रियाओं पर सामाजिक संदर्भों के प्रभाव से संबंधित है, वह है सीखना। सीखना उस सामाजिक वातावरण/ संदर्भ से बेहद प्रभावित होता है जहाँ से विद्यार्थी और शिक्षक आते हैं।

हम शिक्षकों को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि स्कूल और कक्षा का सामाजिक वातावरण सीखने की प्रक्रिया यहाँ तक की पूरी शिक्षा प्रक्रिया पर असर डालता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए मनोवैज्ञानिक विशिष्टताओं के साथ–साथ विद्यार्थी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संदर्भों की ओर अधिक बल देने की आवश्यकता है।

आइए महत्वपूर्ण बदलावों पर एक नजर डालते हैं :

महत्वपूर्ण बदलाव

पहले

- शिक्षक केंद्रित, स्थिर डिज़ाइन
- शिक्षक का निर्देश और निर्णय
- शिक्षक का मार्गदर्शन और प्रबोधन
- निष्क्रिय भाव से सीखना
- चारदीवारी के अंदर सीखना
- ज्ञान ''प्रदत्त'' और स्थिर है
- अनुशासन केंद्रित
- रैखिक अनुभव
- मूल्यांकन, संक्षिप्त

वर्तमान में

- शिक्षार्थी केंद्रित, लचीली प्रक्रिया
- शिक्षार्थी की स्वायत्ता
- शिक्षार्थी को सहयोग द्वारा सीखने को प्रोत्साहन
- सीखने में सक्रिय भागीदारी
- विस्तृत सामाजिक संदर्भों में सीखना
- ज्ञान विकसित होता है, रचा जाता है
- बहु–अनुशासनात्मक शैक्षणिक दृष्टि
- बहुविध एवं विभिन्न अनुभव
- बहुविध, सतत्

योग्यता की रूपरेखा

आपने देखा– ये महत्वपूर्ण परिवर्तन हैं जो यह मांग करते हैं कि हम भी परिवर्तन को स्वीकारें और अपनी बदलती भूमिका, ज्ञान के स्रोत के बदले सुविधादाता के रूप में अपनी क्षमताओं का विकास करें, जिससे हम ऐसे अवसर रच पाए, जिससे बच्चो में अर्न्तनिहित क्षमताएँ बाहर आएँ उनका विकास हो। हम पारंपरिक ढाँचे से योग्यता आधारित ढांचे की ओर कदम बढ़ाएं।

पारंपरिक ढाँचे से योग्यता आधारित ढाँचे की ओर जाने में महत्वपूर्ण परिवर्तन –

पारंपरिक ढांचा

1. मानकीकृत / Standardized:
   निर्देश पूरे वर्ग के लिए मानकीकृत है और सीखने के परिणामों को कक्षावार–नामित किया गया है।
2. सीखने का तरीका / Learning approach:
   शिक्षक केंद्रित।
3. वास्तविक जीवन में जुड़ाव नहीं / No real life application : केवल कुछ LO वास्तविक दुनिया में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल को बढ़ावा दे सकते है।
4. अलग–अलग / Segregated : पाठ्यक्रम के अंशों का विभिन्न अंतरालों पर परीक्षण किया जाता है।

योग्यता आधारित ढांचा

1. अनुकूलित / Customized:
   निर्देश अलग–अलग सीखने के परिणामों के साथ छात्र की जरूरतों से मेल खाने के लिए अनुकूलित है।
2. सीखने का तरीका / Learning approach:
   विद्यार्थी केंद्रित
3. वास्तविक जीवन से जुड़ाव / Real life application : 21वीं सदी के कौशल और वास्तविक दुनिया में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल के लिए संरेखित।
4. पूरक / Complementary: फॉर्मेटिव आकलन योग्यतात्मक आकलन को पूरक करता है।

कुछ क्षमताएँ जिनका विकास बच्चों में करना आवश्यक है, वे स्तरवार यहाँ दी जा रहीं हैं।

स्तर 1 से 4

स्तर 1

तथ्यों को याद करने की क्षमता

(The ability to recall facts)

स्तर 2

वैचारिक ज्ञान, या तथ्यों को संदर्भ में रखने की क्षमता।

(Conceptual knowledge or context)

स्तर 3

उपयुक्त रणनीति बनाने की सोच का उपयोग निर्णय लेने या तर्क में करना

(Employing strategic thinking through the use reasoning or decision making.)

स्तर 4

जानकारी को संश्लेषित करने या वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों में लागू करने के लिए विस्तारित सोच का उपयोग करना ।

(Using extended thinking to synthesize information or apply it to real world application.)

ऊपर जिन महत्वपूर्ण बदलावों और स्तरानुसार क्षमताओं की बात की गई है। अब देखें कि एन. सी.एफ. 2005 में स्कूली शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य कौन से हैं ?

सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के मद्देनज़र, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (एन.सी. एफ. 2005) में स्कूली शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्यों को पहचाना गया है ?

- बच्चों को उनके विचार और कार्य में स्वतंत्र होना और दूसरों के प्रति और उनकी भावनाओं के प्रति संवेदनशील बनाना।
- बच्चों को एक लचीली और रचनात्मक तरीके से नयी स्थितियों का सामना करने और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए सशक्त बनाना।
- बच्चों में विकास की दिशा में काम करने और आर्थिक प्रक्रियाओं और सामाजिक परिवर्तन में योगदान करने की क्षमता का विकास करना।

इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए स्कूलों को समानता, गुणवत्ता और लचीलेपन पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। देश की विविधता को देखते हुए, विद्यार्थियों के संदर्भों को कक्षा में लाना महत्वपूर्ण है। **एन.सी.एफ. 2005 पाठ्यपुस्तकों से परे जाने के लिए शिक्षकों की भूमिका पर जोर देती है ताकि बच्चे अपने स्वयं के अनुभवों से रोल प्ले, ड्राइंग, पेंटिंग, ड्रामा, शैक्षिक भ्रमण और प्रयोगों के संचालन के माध्यम से सीख सकें।**

एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार मूल्यांकन को अधिगम और कक्षा की अंतर्निहित प्रक्रियाओं के रूप में देखने की जरूरत पर भी जोर दिया गया है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक अपने परीक्षण के परिणामों की प्रतीक्षा करने, रिकॉर्डिंग तथा रिपोर्टिंग पर समय व्यतीत करने के बजाय तत्काल सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से अपने तरीके से बच्चों का निरंतर और व्यापक रूप से मूल्यांकन करें। इसके अलावा, इसमें न केवल गणित, भाषा, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान बल्कि जीवन कौशल, सामाजिक, व्यक्तिगत, भावनात्मक और मनोगतिक कौशल सीखने पर भी जोर दिया जाता है।

एन.सी.एफ. 2005 में विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण–शास्त्र पर प्रकाश डाला गया है, जिसका अनुसरण तब किया जा सकता है जब पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों और कक्षा की गतिविधियों की योजना को विकसित की जा रही है उस समय भी विद्यार्थी पर ध्यान केंद्रित हो। विद्यार्थी बहुधा श, स, छ, क्ष, र, ऋ के उच्चारण में भेद नहीं कर पाते। इन वर्णों से बने शब्दों का अधिक से अधिक उच्चारण कराएँ। निरंतर अभ्यास से उच्चारण दोष अवश्य दूर होते है। शिक्षक उनके दैनिक जीवन के अनुभव को जोड़ने का प्रयास करें। ऐसा करते समय शिक्षक प्रत्येक बच्चे के सीखनें के प्रतिफलों में प्रगति का निरीक्षण करेगें।

यहाँ योग्यता के 4 स्तर दिये जा रहे है, जिससे आप शिक्षण के साथ–साथ बच्चों की शैक्षिक प्रगति की पहचान कर सकें।

स्तर 1 से 4

प्रत्येक योग्यता पर छात्रों द्वारा सीखा और प्रदर्शित किए जाने वाले कौशल का सेट –

1
याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करके खोजें, लेबल करना, वर्णन करना

➡

2
समझना, व्याख्या करना, चित्रण करना, संक्षेप करना, मेल करना।

➡

3
लागू करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, ड्रा करना, गणना करना

➡

4
मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, तुलना करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना

Learning Outcomes mapped to competency levels

Chapter अध्याय	Sub-Topics उप-विषय	Level -1 स्तर-1	Level -2 स्तर-2	Level -3 स्तर-3	Level -4 स्तर-4
After the lesson, students will be able to : पाठ के बाद, विद्यार्थी कर सकेंगे :		Remember, Recall, List, Locate, Label, Recite याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करना, खोजना लेबल करना, वर्णन करना	Understand, explain, Illustrate, summaries, match समझना, व्याख्या करना, संक्षेप में लिखना, उदाहरण देना, मेल करना	apply, organize, use, solve, prove, draw प्रयोग करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, चित्रण करना	evaluate, hypothesis, analyses, compare, create, categories मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, तुलना करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना
1	2	3	4	5	6
एकता का बल	• कहानी का हाव–भाव चित्रों द्वारा सुनाना • कहानी में आये शब्दों के अर्थ • प्रश्नों के उत्तर • अपने पर आधारित प्रश्न के उत्तर दे पायेगें हमारे मददगार कौन है – भोजन, कपड़े, स्वास्थ्य–बर्तन, शिक्षा, सही शब्दों से मिलान कर पायेगें। 202, 203	• कहानी का वाचन कर पायेगे – पीपल, कबूतर, चिल्लाना, बहेलिया आदि शब्दों के अर्थ बता पायेगें। • प्रश्नों के उत्तर– कबूतर कहाँ रहते है? कबूतर क्यों न उड़ सके? सभी कबूतरों ने बूढ़े कबूतर से क्षमा क्यों मांगी? • हमारे मद्दगारों के बारे में चर्चा कर पायेगें – • जोड़ी मिलान कर पायेगें – कबूतर–जाल काट दिया चूहे ने – आगे आगे उड़ रहा था।	• पूर्व ज्ञान पर आधारित प्रश्न – किन लोगों को एक साथ रहते देखा है? चींटी, चिड़िया कौआ, कबूतर चूहे आदि के बारे में बता पायेगें। (चर्चा) • चित्र को देखकर पांच वाक्य बना पायेगे। • वचन बदलकर शब्द बना पायेगे – बूढ़ा, बूढ़े, बूढ़ो चूहा, चूहे, चूहो 205, 208, 209	• ड, ढ, त्र, क्ष वर्णों से शब्द बना पायेगें। • दिए गयें चित्र पर चर्चा कर कहानी बना पायेगे। LO 208, 209, 214	• मछली और मछुआरा पर कहानी बना पायेगे • कबूतर मछली पर गीत, कविता सुना–पायेगें। LO 206, 207, 215, 216, 217

H 2- 02,03,04,05,07,08,09,010,01,014,015,016,017

प्रादर्श पाठ योजना

कक्षा – दूसरी **पाठ –** एकता का बल

उपविषय – कहानी को हाव–भाव से सुनाना, कहानी उपरांत बच्चे प्रश्नों का उत्तर दे पाएंगे, कहानी में आए शब्दों के अर्थ बच्चें बता पाएंगे, चित्रों की पहचान, वाक्य बनाना, वचन बदलकर शब्द बना पाएंगे, ड, ढ़, त्र, क्ष, वर्णों से शब्द पहचान पाएंगे, दिए गये चित्र पर कहानी बना पाएंगे।

Learning outcomes – (202, 203, 204, 205, 208, 209)

202– कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि ध्यान से सुनकर अपनी भाषा में बताते/सुनाते हैं।

203– देखी सुनी बातों कहानी, कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

204– अपनी निजी जिंदगी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को सुनाई जा रही सामग्री– जैसे कविता, कहानी, पोस्टर, विज्ञापन आदि से जोड़ते हुए बातचीत शामिल होते हैं।

205– भाषा में निहित शब्दों और ध्वनियों के साथ खेल का मजा लेते हुए, लय और तुक वाले शब्द बना पाएंगे।

208– चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारिकी से अवलोकन कर पाएगें।

209– चित्रों में क्रमवार सजाए चित्रों में घट रही अलग–अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी, के सूत्र में देखकर समझते है, और सराहना करते हैं।

स्तर 1 –

1. कहानी का वाचन कर पाएंगे – पीपल, कबूतर, चिल्लाना, बहेलिया आदि शब्दों के अर्थ बताएंगे।
2. प्रश्नों के उत्तर– कबूतर कहाँ रहते है? कबूतर क्यों न उड़ सके?
3. हमारे मद्दगारों के बारे में चर्चा कर पाएंगे।
4. जोड़ी मिलान कर पाएंगे – कबूतर–जाल काट दिया चूहे ने – आगे आगे उड़ रहा था।

स्तर 2 –

1. पूर्व ज्ञान पर आधारित प्रश्न – किन लोगों को एक साथ रहते देखा है? चींटी, चिड़िया कौआ, कबूतर चूहे आदि के बारे में बता पाएंगे। (चर्चा)
2. चित्र को देखकर पांच वाक्य बना पाएंगे।
3. वचन बदलकर शब्द बना पाएंगे– बूढ़ा, बूढे, बूढो, चूहा, चूहे, चूहा।

स्तर 3 –

1. ड, ढ, त्र, क्ष वर्णों से शब्द बना पाएंगे।
2. दिए गयें चित्र पर चर्चा कर कहानी बना पाएंगे।

स्तर 4 –

1. मछली और मछुआरा पर कहानी बना पाएंगे।
2. कबूतर मछली पर गीत, कविता सुना–पाएंगे।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

कक्षा में शिक्षक– नमस्ते बच्चों/जय जोहार

बैठक व्यवस्था– अर्ध गोलाकार में बच्चों को बैठाएगें।

पूर्व ज्ञानः– बच्चों से कहानी से संबधित, परिवेश से संबंधित बातचीत–

अपनी बात कहते हुए –

1. आज मैं जब घर से आ रही थी तो मैने घर के पास एक कबूतर देखा।
2. आप लोगों ने क्या–क्या देखा ? (बच्चें अपने घर/परिवेश से जोड़ते हुए बताएंगे)

गतिविधि –

कहानी – शिक्षक हाव–भाव के साथ कट आउट चित्र चार्ट आदि के द्वारा कहानी सुनाएंगे।

सहायक सामग्री – कहानी सुनाने के लिए कटआउट/चित्र चार्ट/आडियों, वीडियों, पोस्टर, फ्लेनल बोर्ड, किताबे, डस्टर, चाक।

बच्चों आज मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता/सुनाती हूँ इस कहानी का नाम है– **एकता का बल**

Step 1.

शिक्षक– शिक्षक कहानी सुनाएंगे– जगंल में एक पीपल का पेड़ था.....
(कहानी आगे पाठ्य पुस्तक में देखें)

आकलन– बच्चों ने कहानी ध्यान से सुनी या नही पुर्नरावृत्ति करते हुए शिक्षक बच्चों से प्रश्न पूछेगें।

प्रश्न–

1. एक साथ कौन रहता था ?
2. कबूतर ने क्या देखा ?
3. कबूतर क्यों नहीं उड़ सकें ?
4. शिकारी ने क्या बिछाया था ?

शिक्षक बच्चों से – (बच्चों कैसी लगी कहानी, मजा आया– बच्चों की राय ली जा सकती है)

टीपः–

1. पाठ 7 एकता का बल को '**दीक्षा एप्प**' पर '**QR कोड**' में पर भी दूसरे रूप में देखा जा सकता है।

2. शिक्षक स्वयं नवाचार कर नया तरीका अपना सकते है जैसे– नाटक, अभिनय, गीत आदि।

Step 2.

गतिविधि–

नमस्ते बच्चों/जय जोहार वार्तालाप के द्वारा कक्षा प्रांरभ।

आपने अपने घर के पास किन–किन पक्षियों को देखा, आदि बच्चों से बातचीत करना।

सहायक सामग्री– चित्र पाकिट/फ्लेनल बोर्ड, किताब, डस्टर, चाक

गतिविधि प्रारंभ –

1. पक्षियों के कुछ 1, 2 चित्रों को बोर्ड पर लगाना व बच्चों से पूछते जाना (पहचान कराना)

2. किसी एक चित्र पर पाँच वाक्य लिखने को कहना।

आकलन निर्देश– बच्चों के लिखते समय शिक्षक प्रत्येक बच्चें का अवलोकन व मार्गदर्शन करते रहेंगे।

गतिविधि–

वचन बदलना और लिंग बदलना

1. वचन बदलना

उदाहरण – लड़के – लड़कों
लड़की – लड़कियों

(कक्षा के बच्चो को साथ लेकर गतिविधि करवाएंगे)

इसी प्रकार पशु–पक्षियों के उदाहरण दिए जाएंगे –

2. लिंग बदलना

उदाहरण – 1. बकरा – बकरियाँ
2. गाय – बैल

गृहकार्य– निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए।

चूहा, बकरी, बिल्ली, कुत्ता, गाय।

Step 3.

गतिविधि –

शब्द बनाना

उदाहरण वर्ण के आधार पर शब्द बनाना–

1. ड – डमरू, डिब्बा

   ढ – ढक्कन , ढोलक

   त्र – त्रिशूल

2. ड, ढ, पहचानकर वर्ण के नीचे लाइन खीचें

   1– खिचडी, डमरू , सड़क, चिडियाघर, घोड़ा

   2. बूढ़ा, ढक्कन, ढोलक

निर्देश – 1. शिक्षक बोर्ड पर लिखकर भी शब्द बनवा सकते हैं।

2. चित्र और कार्डो का मिलान भी करा सकते हैं।

गृहकार्य– मछली का चित्र बनाकर पाँच वाक्य लिखकर लाओ।

Task Distribution Matrix- TDM (Blue Print)

आकलन की तैयारी के लिए प्रश्नों का निर्माण एक आवश्यक प्रक्रिया है जिससे विद्यार्थी की क्षमताएँ पता चले। आइए देखे कि ब्लूप्रिंट या TDM में क्या–क्या सूचनाएँ/जानकारी निहित होती है।

- कक्षा विषय
- पाठ्य सामग्री
- विभिन्न शैक्षिक/योग्यताओं पर प्रश्न के विवरण जैसे स्तर Level से 1 – 4
- प्रश्नों के प्रकार जैसे अतिलघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय आदि।
- प्रसंग/संदर्भ : ज्ञानात्मक, भाषिक, व्याकरणिक, बोधात्मक।
- अनुक्रिया के प्रकार जैसे – (i) Selected (चयनित), (ii) Constructed (रचनात्मक)

हम कह सकते हैं TDM एक ऐसा ढाँचा या फ्रेमवर्क है जो पाठ्यसामग्री (Syllabus) के प्रत्येक प्रश्नों के स्तरों, संदर्भों एवं प्रतिक्रिया के प्रकारों को बताता है।

यहाँ प्रतिक्रिया के प्रकार को थोड़ा विस्तार दिया जा सकता है –

1. **चयनित (Selected) :** इसके अंतर्गत बच्चों को उत्तरों के चुनाव करने होते है जैसे –
   - बहुविकल्पीय प्रश्न
   - रिक्त स्थान भरें
   - सही गलत उत्तर का चुनाव करें।

2. **निर्माण (Constructed) :** इसके अंतर्गत प्रश्नों के उत्तर बच्चों को स्वयं निर्मित करने होते है, जैसे – अति लघुउत्तरीय प्रश्न, लघुउत्तरीय प्रश्न, दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

संदर्भ : वास्तविक जीवन की परिस्थितियाँ जिनके आधार पर प्रश्न तैयार किए जाते है।

1. ज्ञानात्मक (व्यक्तिगत) – विषयवस्तु के संबंध में निहित तथ्यों, विवरणों को जानना।
2. भाषिक (व्यावसायिक) – अनुवाद (भाषान्तर), पर्यायवाची, विलोम, पदों को जानना। कर्तृपद, क्रियापद, अव्यय एवं वाक्य में प्रयुक्त अन्य पदों को पहचानना।
3. व्याकरणिक (वैज्ञानिक) – व्याकरणिक तत्वों का संश्लेषण–विश्लेषण व अनुप्रयोग करना। जैसे – संधि, समास, कृदन्त, तद्धित आदि।
4. बोधात्मक (सामाजिक) – विषय–वस्तु/पाठ के आधार से उसमें निहित शिक्षा/बोध को समझना और व्यक्त करना तथा अन्य तथ्यों के साथ तुलना करना/अनुप्रयोग करना।

रूब्रिक्स क्या है?

रूब्रिक्स एक आकलन उपकरण है जो स्पष्ट रूप से लिखित से मौखिक तक किसी भी प्रकार के विद्यार्थियों द्वारा किए गए कार्यों, प्रत्युत्तरों आदि सभी घटकों में उपलब्धि मानदंड को इंगित करता है।

- रूब्रिक्स, एक विशिष्ट कार्य पर विद्यार्थियों का आकलन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले मानदंडों का एक व्यापक समूह है।
- रूब्रिक्स कार्य के प्रदर्शन और आकलन के मानदंडों को रेखांकित करता है। यह शिक्षक और विद्यार्थियों दोनों द्वारा सहभागितापूर्ण तरीके से विकसित किया जाता है।
- रूब्रिक्स में लचीलापन और अनुकूलन क्षमता होती है, जो बहुत कम अन्य आकलन उपकरण के पास होती है।
- जब रूब्रिक्स को सही तरीके से उपयोग किया जाता है, तो समय पर प्रतिक्रिया प्रदान करने, विद्यार्थियों को विस्तृत प्रतिक्रिया का उपयोग करने, महत्वपूर्ण सोच को प्रोत्साहित करने, शिक्षण विधियों को परिष्कृत करने और दूसरों के साथ संचार की सुविधा में आसानी होती है।

उदाहरण के लिए कक्षा 2 पाठ 7 'एकता का बल' का आकलन चार स्तरों पर रूब्रिक्स का उपयोग करके किया जा सकता है।

इस तरह सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति को रूब्रिक्स के अनुसार तय मापदंडों में से मापा जा सकता है। इसके लिए स्तर (Level) 1, 2, 3, 4 निर्धारित किए गए है। यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि विषयवार–कक्षावार अध्यायवार रूब्रिक्स तैयार किए गए हैं जो SCERT CG के वेबसाइट scert.cg.gov.in पर उपलब्ध है।

विषय कोड | 5 | 0 | 1 | 1 |

राज्य स्तरीय आकलन (SA-1)

सत्र 2019–20

कक्षा–5

विषय – हिन्दी हिन्दी माध्यम

समय – 02:00 घंटे पूर्णांक– | 4 | 0 |

परीक्षार्थी आई डी | | | | | | | | | | |

परीक्षार्थी का नाम ..... शाला का नाम .....

प्राप्तांक (अंकों में) | | | (शब्दों में) .....

हस्ताक्षर प्रधान पाठक..... हस्ताक्षर निरीक्षक .....

केवल मूल्यांकन हेतु										
						PAPER CODE				
STUDENT CODE										

				केन्द्राध्यक्ष हस्ताक्षर एवं सील		हस्ताक्षर मूल्यांकनकर्ता	
1		10					
2		11					
3		12					
4		13					
5		14					
6		15					
7		16					
8		17		दिनांक:		दिनांक:	
9							
कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained)							

निर्देश : –

1. सभी प्रश्नों को हल करना अनिवार्य है।
2. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक के लिए 1 अंक, प्रश्न क्रमांक 6 से 10 तक के लिए 2 अंक, प्रश्न क्रमांक 11 से 15 तक के लिए 3 अंक तथा 16 और 17 के लिए 5 अंकहैं।

प्रश्न 1. "हमने छुट्टियाँ बिताई।" यह वाक्य है – (1 अंक)

(अ) भूतकाल में है। (ब) वर्तमान काल में है।
(स) भविष्य काल में है। (द) स्पष्ट नहीं है।

प्रश्न 2. इसमें से बहुवचन शब्द है – (1 अंक)

(अ) फूल (ब) भौंरा
(स) तितलियाँ (द) कली

प्रश्न 3. 'सड़क' ने स्वयं को ..... के समान बताया है – (1 अंक)
खाली स्थान में कौन–सा शब्द आएगा ?

(अ) नाग (ब) अजगर
(स) मछली (द) राक्षस

प्रश्न 4. रेखांकित शब्द का विलोम लिखकर वाक्य को पूरा करो। (1 अंक)
<u>शांति</u> के समय ..... की बातें करना उचित नहीं।

प्रश्न 5. दिए गए शब्द में 'अ' उपसर्ग लगाकर विलोम शब्द बनाओ। (1 अंक)
सहयोग

.....

प्रश्न 6. च्यूरा वृक्ष से गाँव वालों को क्या–क्या मिलता है ? (2 अंक)

.....

.....

प्रश्न 7. प्रश्न पूछना जरूरी क्यों है ? (2 अंक)

.....

.....

प्रश्न 8. मोईना बड़ी होकर शिक्षिका बनी। आप बड़े होकर क्या बनना चाहोगे ? (2 अंक)

.....

.....

.....

प्रश्न 9. सुनीता को दुकानदार का व्यवहार बुरा क्यों लगा ? (2 अंक)

.....

.....

.....

प्रश्न 10. कर्नाटक में अंतरिक्ष संबंधी शोध व उपग्रह बनाने का कौन–सा केन्द्र है ? नाम लिखो। (2 अंक)

.....

.....

प्रश्न 11. पाठ्यपुस्तक से ली गई निम्न पंक्तियों का भावार्थ लिखो। (3 अंक)

पूजे न गए शहीद तो फिर
वह बीज कहाँ से आएगा ?
धरती को माँ कहकर मिट्टी,
माथे से कौन लगाएगा ?

अथवा

दुनिया के सुख बर दुख सहिके, पथरा ले तेल निकारत हन।
हम नवा सुरुज परघाए बर, श्रम के आरती उतारत हन।।

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 12. नीचे लिखे शब्दों में प्रत्यय लगाकर नवीन शब्द लिखो। (3 अंक)

धैर्य, गाड़ी, घुमाव, सब्जी (कोई –3)

.....

.....

.....

प्रश्न 13. सही जोड़ी बनाओ – (3 अंक)

(अ) श्रवण बेल गोला – कर्नाटक का लोकनाट्य

(ब) लाल बाग – गोमतेश्वर भगवान

(स) यक्ष गान – फूलों की प्रदर्शनी

.....

.....

.....

प्रश्न 14. दिये गए अर्थ के लिए मुहावरे चुनकर लिखो – (3 अंक)

(अ) बहुत अधिक क्रोधित होना–.....

.....

(ब) लालच आना–.....

.....

(स) बहुत अधिक परिश्रम करना–.....

.....

(लाल पीला होना, पथरा ले तेल ओगारना, लार टपकना)

प्रश्न 15. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं इनमें से चुनकर पर्यायवाची शब्द लिखो – (3 अंक)

पेड़	धरा	विटप
घोड़ा	पानी	तरू

वृक्ष – ---------- – ---------- – ----------

प्रश्न 16. 'हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुशासन अत्यन्त आवश्यक है। (5 अंक)

जरा सोचिए क्या सेना के लिए सख्त अनुशासन के बिना लड़ पाना संभव है।

अनुशासन के बिना लक्ष्य प्राप्ति असंभव है। अनुशासन किसी की प्रगति के लिए बहुत ही आवश्यक है। हमें हर छोटी–बड़ी गतिविधि का ध्यान रखना चाहिए जैसे सही समय और सही मात्रा में भोजन करना, सभी कार्य सही समय व सही तरीके से करना, नियत समय पर सोना व जागना, व्यायाम करना।

स्वस्थ और सफल जीवन जीने के लिए हमें अनुशासित रहना जरूरी है। अनुशासनहीन व्यक्ति लापरवाह होता है। उससे उसके स्वास्थ्य व शिक्षा पर बुरा असर पड़ता है जिससे उसकी सफलता पर हमेशा संदेह रहता है।''

ऊपर दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़कर निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो –

प्रश्न I – सेना को लड़ने के लिए बहुत आवश्यक है – (1 अंक)
(अ) बंदूक (ब) तोप (स) अनुशासन

.....

प्रश्न II – किसकी सफलता पर हमेशा संदेह रहता है ? (2 अंक)

.....

प्रश्न III– अनुशासनहीन व्यक्ति ..... होता है। (1 अंक)

प्रश्न IV– इस गद्यांश का शीर्षक दीजिए। (1 अंक)

.....

प्रश्न 17. 'मैं नदी हूँ' या 'मैं पेड़ हूँ।' विषय पर लगभग 80 शब्दों में रचनात्मक लेखन कीजिए। (5 अंक)

अथवा

14 नवम्बर को बाल मेला मनाने के लिए अनुमति हेतु अपनी शाला के प्रधान पाठक को आवेदन पत्र लिखो।

पाठ और लेखन के संदर्भ में

व्यक्तिगत	• ऐसे ग्रंथ जो किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत हितों को पूरा करने के उद्देश्य से हैं, व्यावहारिक और बौद्धिक दोनों। जैसे व्यक्तिगत पत्र, कल्पना, जीवनी।
सार्वजनिक	• ग्रंथ जो बड़े समाज की गतिविधियों और चिंताओं से संबंधित हैं। जैसे मंच शैली ब्लॉग, समाचार वेबसाइटों और सार्वजनिक नोटिस।
शैक्षिक	• विशेष रूप से शिक्षा के उद्देश्य से बनाया गया है। उदाहरण: पाठ्यपुस्तकें
व्यावसायिक	• कुछ तात्कालिक कार्य की सिद्धि को शामिल करता है। उदाहरण: कार्यस्थल के दिशा-निर्देश, नौकरियों के वर्गीकृत विज्ञापन।

प्रतिक्रिया के प्रकार

प्रतिक्रिया प्रारूप	प्रश्नों की टाइपोलॉजी		
चयनित	बहुविकल्पीय	रिक्त स्थान भरें	सही / गलत
निर्माण	अति संक्षिप्त उत्तर	संक्षिप्त उत्तर	दीर्घ उत्तर

Lowest performing LOs in Hindi in Class 1 – 5

Class – 1

L108	संदर्भ की मदद से आस–पास मौजूद प्रिंट के अर्थ और उद्देश्य का अनुमान लगाते हैं, जैसे –टॉफी के कवर पर लिखे नाम को 'टॉफी', 'लॉलीपॉप' या 'चॉकलेट'बताना।
L109	को पहचानते हैं, जैसे– 'मेरा नाम विमला है। बताओ, यह कहाँ लिखा हुआ है?/ इसमें 'नाम' कहाँ लिखा हुआ है?/ 'नाम' में में 'म' पर अंगुली रखो।
L102	सुनी सामग्री (कहानी, कविता,आदि) के बारे में बातचीत करते हैं, अपनी राय देते हैं, प्रश्न पूछते हैं।

Class – 2

L210	परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री में रुचि दिखाते हैं और अर्थ की खोज में विविध्प्रकार की युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं जैसे– चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना, अक्षर–ध्वनि संबंध्का इस्तेमाल करना, शब्दों, पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना।
L203	देखी, सुनी बातों, कहानी, कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
L216	अपनी निजी जिंदगी और परिवेश पर आधरित अनुभवों को अपने लेखन में शामिल करते हैं।

Class – 3

L309	स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविध्के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व–नियंत्रित लेखन (कनवैंशनल राइटिंग) करते हैं।
L312	अलग–अलग तरह की रचनाओंध्सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर अपनी प्रतिक्रिया लिखते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (लिखितध्ब्रेललिपि आदि में) देते हैं।
L303	सुनी हुई रचनाओं की विषय–वस्तु, घटनाओं, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, राय बताते हैं / अपने तरीके से (कहानी, कविता आदि) अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं।

Class – 4

L416	अलग–अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझ कर उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं।
L401	दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते और प्रश्न पूछते हैं।
L413	किसी विषय पर लिखते हुए शब्दों के बारीक अंतर को समझते हुए और सराहते हैं और शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए लिखते हैं।

Class – 5

L517	अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिखते हैं, कविता, कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं।
L501	सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधरित कहानी, कविता आदि) की विषय–वस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं/ अपनी स्वतंत्रा टिप्पणी देते हैं /अपनी बात के लिए तर्क देते हैं/निष्कर्ष निकालते हैं।
L506	अपनी पाठ्य पुस्तक से इतर सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझते हुए पढ़ते और उसके बारे में बताते हैं।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा उपर्युक्त विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों से यह संकेत मिलता है कि हमें शिक्षण रणनीतियों में कुछ संशोधन कर नयी रणनीतियाँ बनानी होगी, जो उन क्षेत्रों को मजबूत करें जहाँ हमारा प्रदर्शन कमजोर है, साथ ही हमारे उच्च प्रदर्शन क्षेत्र (Higher Performance Area) को और भी बेहतर बनाने में हमारी मदद करें। प्रमुख उद्देश्य है कि विद्यालयीन शिक्षा की गुणवत्ता को विकसित करने के लिए अपेक्षित वातावरण सुलभ कराना जिससे विषय में हमारा प्रदर्शन बेहतर हो, बच्चों का विषयगत क्षमताएँ बढ़े यानि की लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति कक्षा में हो।

Day - 2

मूल्यांकनः रचनात्मक ⟶ सावधिक ⟶ योगात्मक आकलन

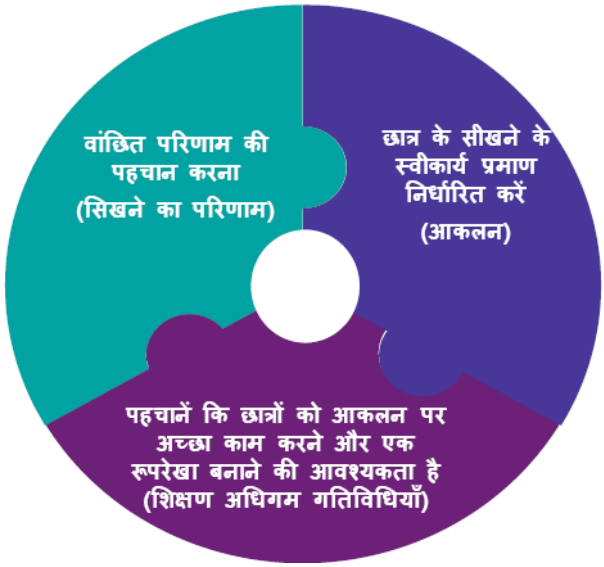

मूल्यांकन, सीखने के परिणामों और अध्यापन शिक्षण गतिविधियों के बीच संबंध

आकलन

शिक्षा में आकलन क्या है? इसे साक्ष्यों के लिए सावधानीपूर्वक किए गए परीक्षण के द्वारा किसी व्यक्ति या किसी शैक्षणिक कार्यक्रम के बारे में निर्णय लेने की एक प्रक्रिया है। आकलनों का महत्त्व मूल्यांकन करने के औजारों की तरह ही है।

भाषा की कक्षा और आकलन

भाषा की कक्षा में आकलन के उद्देश्य हैं–भाषा की समझ, इसे विभिन्न संदर्भों में उपयोग करने की क्षमता और सौंदर्यपरक पहलू परख सकने की क्षमता का मापन। आकलन सीखने– सिखाने की प्रकिया का अभिन्न अंग है। इसलिए यह आकलन करने से पहले कि बच्चे ने किसी कौशल को प्राप्त किया है या नहीं यह जरूर सोच लें कि आपने उस कौशल को प्राप्त करने के लिए बच्चे को बार–बार अलग तरह के अवसर दिए हैं या नहीं। यहाँ पर छठी से आठवीं तक की कक्षाओं के लिए आकलन के कुछ मूलभूत बिंदु संकेतक शिक्षकों सुविधा के लिए दिए जा रहे हैं जिनमें बच्चे की जरूरत के अनुसार बदलाव किया जा सकता है।

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं में आकलन, सीखने की प्रक्रिया का एक हिस्सा होता है जो हमें यह समझने में मदद करता है कि शिक्षण किस प्रकार का हो। अतः आकलन रोज की गतिविधियों के साथ स्वाभाविक रूप से किया जाना चाहिए। हम सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को एक

जीवंत प्रक्रिया तभी बना सकते हैं जब हम बच्चों को सीखने के ढेर सारे अवसर दें और बच्चे अपने स्तर के अनुरूप सीख रहे हैं या नहीं इस बात का सतत् आकलन करते चलें। आकलन के साथ–साथ अब हम उन कठिनाईयों के बारे में पता करेंगे जो बच्चों के सीखने में बाधक बन रही हैं, तभी हम सीखने की प्रक्रिया को सुधारने का प्रयास कर सकेंगे ।

आकलन सीखने का एक साधन

हमारा उद्देश्य है सभी बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करना और प्रत्येक बच्चे की क्षमता, उम्र और स्तर को ध्यान में रखते हुए उसे एक निश्चित स्तर तक पहुँचाना। इस उद्देश्य को पूरा कर पाने के लिए हम आकलन को सीखने के एक साधन के रूप में देखते हैं। सिर्फ यह पता लगा लेना या जाँच कर लेना पर्याप्त नहीं है कि कितने बच्चों का शैक्षिक स्तर क्या है, आकलन के द्वारा बच्चों का आपस में सीखना–सिखाना, प्रभावी बनाना ही मुख्य उद्देश्य है। यानी कि आकलन को हम सीखने के उपकरण (Learning tool) रूप में महत्त्व देते हैं, मात्र बच्चों की उपलब्धि स्तर जानने के उपकरण (Testing tool) के रूप में नहीं।

गतिविधि

आकलन की व्यापक समझ के लिए आवश्यक है कि आकलन के विविध आयामों को स्रोत व्यक्ति चर्चा में लाने का प्रयास करें, इसके लिए आवश्यक है कि प्रतिभागियों के पूर्व की समझ को वर्तमान पठन से जोड़ा जाये इसके लिए उन्हे आकलन से आकलन की अवधारणा में बदलाव तक के अंश को पढ़ने और विचार विमर्श का अवसर दें फिर उनसे एक अभ्यास कार्य कराएं की प्रस्तुत आलेख में से उपयोगी विचार कौन से लगे जिसे वे अपनी कक्षा की आकलन की प्रक्रिया में उसका उपयोग करेंगे।

आकलन योजना

उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए विकसित नए पाठ्यक्रम नई शिक्षण पद्धति की भावना के अनुरूप आकलन को एक योजनाबद्ध तरीके से सभी शिक्षकों को करना चाहिए। इस योजना की रूपरेखा आपके स्थान विशेष की जरूरतों के अनुरूप कुछ इस प्रकार हो सकती है

- शिक्षक वर्ष भर कक्षा के सभी बच्चों का सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान, लगातार अवलोकन करें और साथ–साथ सुधारात्मक प्रयास करते रहें,
- औपचारिक रूप से आकलन एवं रिकॉर्डिंग, वर्ष में तीन बार चार–चार माह के अंतराल पर कर सकते हैं, आकलन गतिविधि आधारित तरीके से ही करें। बच्चों से तरह–तरह की गतिविधियाँ करा कर उनके शैक्षिक स्तर की जानकारी लें,
- आकलन के दौरान शाला या कक्षा का माहौल अन्य दिनों की ही तरह बिल्कुल सामान्य रहे। जिस सरल से ढंग सीखना– सिखाना चलता है। गतिविधि, बातचीत, प्रश्न–उत्तर, चर्चा, अवलोकन आदि वैसे ही आकलन चलता रहे।
- एक बार में सभी बच्चों को ध्यान से ध्यान से देखना और आकलन तथा सुधार की दृष्टि से बारीकियाँ नोट करना कठिन होगा इसलिए शिक्षक एक बार में 5–6 बच्चों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। आकलन बच्चों को टोलियों में बिठा कर या अलग–अलग तरीके से किया जा सकता है। आकलन रिकॉर्ड करने के लिए प्रत्येक कक्षा के लिए शिक्षक एक आकलन रजिस्टर बनाएँ जिसमें कम–से–कम एक पन्ना तो हर बच्चे के लिए हो। यह रजिस्टर हमेशा शाला में रहे जिससे बच्चों के माता–पिता जब चाहें बच्चों की प्रगति देख पाएँ,

- हर बच्चे का रिकॉर्ड नोट करें जिसकी टिप्पणियाँ स्पष्ट, सटीक और विश्लेषणात्मक हों और बच्चों को सिखाने के प्रयासों के लिए उनका उपयोग हो सके। प्रत्येक चरण में सभी बच्चों के आकलन के बाद सुधार की दृष्टि से आकलन प्रपत्र में से महत्वपूर्ण जानकारी निकाली जाए जैसे, किस बच्चे को सीखने में कौन–सी कठिनाई आ रही है?
- आकलन से प्राप्त जानकारी के आधार पर बच्चों की कठिनाईयों को ध्यान में रखते हुए उनके विकास के लिए पहले से अधिक प्रभावी योजना बनाई जाए जैसे, किन बच्चों को एक साथ बैठाकर सिखाया जा सकता है, किस तरह की गतिविधियाँ उनके लिए उपयुक्त होंगी, किस तरह से उन्हें आपस में सीखते हुए प्रोत्साहन दिलाया जा सकता है, आदि ।
- इस तरह के आकलन में शिक्षक अपना एवं अपने द्वारा कराई जा रही शिक्षण–प्रक्रिया का भी आकलन करें और अपनी शिक्षण–प्रक्रिया में सुधार करके बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करें। इस तरह प्रत्येक चरण के आकलन के बाद लगातार सुधार हो, सिखाने के तरीकों में और सीखने के अवसरों में,
- आकलन तथा टेस्ट के निष्कर्षों के आधार पर बच्चों के माता–पिता को देने के लिए एक प्रगति पत्रक बनाएँ। इस प्रगति पत्रक में शिक्षक आकलन और सत्रांत परीक्षा के आधार पर बच्चों की प्रगति का विवरण देंगे ।
- आकलन के आधार पर अगली कक्षा के शिक्षक को जानकारी भी दी जाए।
- आकलन योजना तैयार करते समय यह ध्यान रखना भी जरूरी है कि किन बिंदुओं को आधार मानकर आकलन किया जाए ।

हिन्दी विषय के अंतर्गत बच्चों के विकास की निरंतर जानकारी के लिए सतत् एवं नियमित आकलन करना जरूरी है। जिसमें विभिन्न विधियों एवं उपकरणों के माध्यम से बच्चों का आकलन किया जाता है।

अ. रचनात्मक आकलन

रचनात्मक आकलन, कक्षा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है, जो सतत् रूप से औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों में किया जाता है। कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को सीखने–सिखाने के पर्याप्त अवसर दिए जाते हैं जिससे बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण कर सकें। बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं गतिविधियों के माध्यम से, अपने अनुभव एवं गलतियों के निरंतर सुधार से करते हैं।

सीखने–सिखाने की इस प्रक्रिया में शिक्षक को यह जानना बहुत आवश्यक है कि **बच्चे कितना सीख रहे हैं, सीखने की प्रगति कैसी है, बच्चे को कहाँ मदद की आवश्यकता है ?** अतः शिक्षक कक्षा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के दौरान विभिन्न उपकरणों के माध्यम से बच्चे का निरन्तर आकलन करता है, आकलन के दौरान शिक्षक न सिर्फ आवश्यकतानुसार बच्चे का उपचारात्मक शिक्षण करता है बल्कि अपने स्वयं की भी शिक्षण प्रक्रिया में सुधार करता है।

शिक्षक अपने स्वयं के फीडबेक हेतु, माता–पिता फीडबेक देने एवं बच्चों की प्रगति जानने के लिए फारमेटिव आकलन के कुछ बिंदुओं को मूल्यांकन पंजी में नोट करता है।

ब. सावधिक आकलन

इस आकलन से पता चलता है कि प्रत्येक बच्चे ने निश्चित अवधि में क्या सीखा? कहाँ उन्हें सहायता की जरूरत है। इस आधार पर शिक्षक अपनी शिक्षण योजना तैयार करते है अर्थात् इस आकलन में निश्चित अवधि में बच्चों की उपलब्धियाँ और कमजोरियाँ लगने के साथ–साथ शिक्षक भी प्रभाविता का भी पता चलता है।

स. योगात्मक आकलन

योगात्मक आकलन प्रत्येक सेमेस्टर, इकाई या पाठ के अंत में किया जाता है। यह आकलन पेपर पेंसिल (लिखित) उपकरण की सहायता से निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर किया जाता है। जिसके लिए प्रश्न पत्र का उपयोग किया जाता है। शिक्षक प्रश्न बनाते समय इस बात का ध्यान रखें कि प्रश्न–पत्र कौशल आधारित हो, रटने पर आधारित न हो तथा बच्चों के अनुभव, कल्पना–शक्ति, सृजनशीलता, तर्क करने, स्वतंत्र विचारों को रखने के लिए अवसर प्रदान करता हो।
प्रश्न बनाते समय प्रश्नों के शैक्षिक उद्देश्यों को भी ध्यान में रखा जाए अर्थात प्रश्न स्तर 1 से 4 पर आधारित हों जिसमें वस्तुनिष्ठ, अति लघुउत्तरीय, लघुउत्तरीय, दीर्घउत्तरीय प्रकार के प्रश्न शामिल हो सकते हैं।

इस तरह सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति को रूब्रिक्स के अनुसार तय मापदंडों में से मापा जा सकता है। इसके लिए स्तर (Level) 1, 2, 3, 4 निर्धारित किए गए है। यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि विषयवार–कक्षावार अध्यायवार रूब्रिक्स तैयार किए गए हैं।

भाषा विषय के अंतर्गत बच्चों के विकास की निरंतर जानकारी के लिए सतत् एवं नियमित आकलन करना जरूरी है। जिसमें विभिन्न विधियों एवं उपकरणों के माध्यम से बच्चों का आकलन किया जाता है।

आकलन के उपकरण : मौखिक प्रश्न, अवलोकन, पोर्टफोलियों, सर्वे, प्रोजेक्ट कार्य, समूह कार्य, लिखित – कार्य, स्व–मूल्यांकन आदि हैं।

आइए हम यहाँ आकलन की कुछ चर्चा कर लें :

प्रकार	कब	उद्देश्य
रचनात्मक	यह शिक्षण के दौरान निरंतर किया जाता है।	• सीखने में सुधार • शिक्षण प्रक्रिया में सुधार
सावधिक और योगात्मक	निश्चित अवधि, किसी इकाई, पाठ या निश्चित पाठ्यक्रम के पूर्ण शिक्षण उपरांत। स्कूल कैलेण्डर के अनुसार या सत्र के अंत में।	• ग्रेडिंग • कक्षोन्नति

एफ.ए. और एस.ए. – विशेषताओं को क्रमबद्ध करना

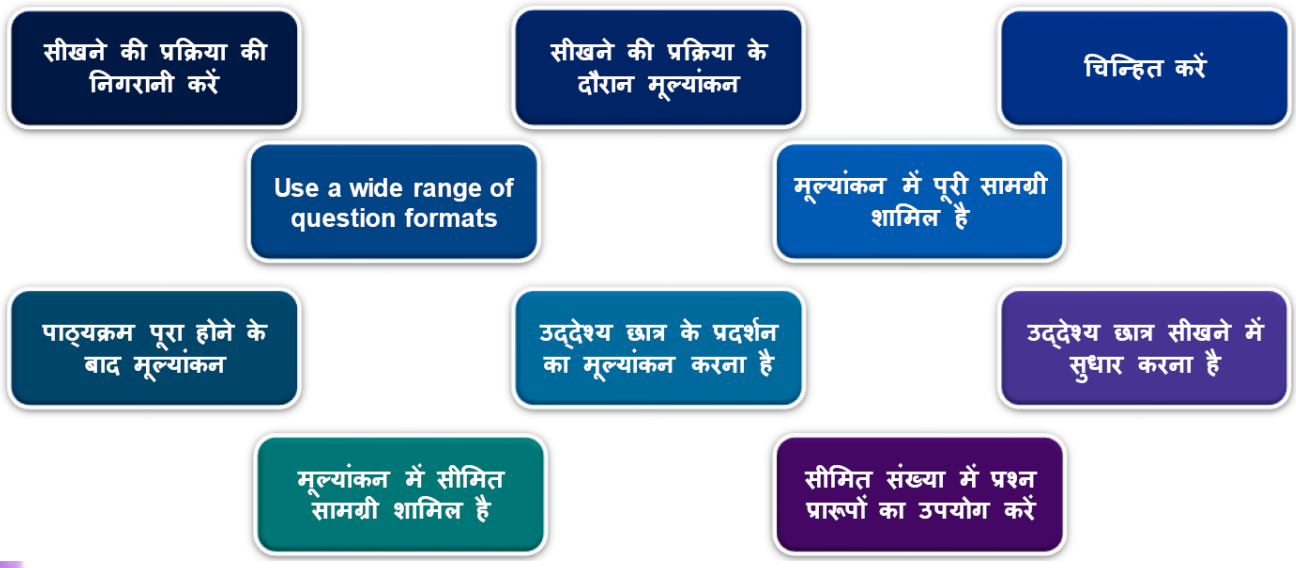

एफ.ए. और एस.ए. गुण निर्दिष्ट करना

FA	SA
छात्रों को सुधार के लिए प्रतिक्रिया दें	विशिष्ट चिह्न या रिपोर्ट निर्दिष्ट करें
एक सीखने की गतिविधि के दौरान मूल्यांकन	मूल्यांकन एक सीखने की गतिविधि के अंत में होता है
उद्देश्य छात्र सीखने की निगरानी करना है	उद्देश्य छात्र सीखने का मूल्यांकन करना है
प्रश्न प्रारूपों की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग करें	सीमित संख्या में प्रश्न प्रारूपों का उपयोग करें
मूल्यांकन में सीमित सामग्री शामिल है	मूल्यांकन में पूरी सामग्री शामिल है

एस.ए. पर आधारित रूब्रिक्स कक्षा 5 – पाठ 3

Chapter अध्याय	Sub-Topics उप-विषय	Level -1 स्तर-1	Level -2 स्तर-2	Level -3 स्तर-3	Level -4 स्तर-4
After the lesson, students will be able to : पाठ के बाद, विद्यार्थी कर सकेंगे :		Remember, Recall, List, Locate, Label, Recite याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करना, खोजना लेबल करना, वर्णन करना	Understand, explain, Illustrate, summaries, match समझना, व्याख्या करना, संक्षेप में लिखना, उदाहरण देना, मेल करना	apply, organize, use, solve, prove, draw प्रयोग करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, चित्रण करना	evaluate, hypothesis, analyses, compare, create, categories मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, तुलना करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना
1	2	3	4	5	6
सोन के फर	• छत्तीसगढ़ी लोक कथा को अपने शब्दों में बताता है। • छत्तीसगढ़ी के कठिन शब्द, मुहावरे–लोकोक्ति के साथ वाक्य विन्यास सीखा। • योजक चिह्न जानता है। • स्त्रीलिंग व पुल्लिंग जानता है।	• पात्रों के नाम जानता है। इसे धारा प्रवाह पढ़ता है। • सब पात्रों का वर्णन करता है। • इसे नाट्यरूपण करता है। • अभिनय करता है।	• कहानी को स्वयं के शब्दों में बता पाता है। • सभी पात्रों के बारे में लिख पाता है । • इसके सभी घटनाओं के क्रम से बता सकता है। • विलोम शब्द जानता है। • मुहावरे का अर्थ जानता है।	• इस पाठ को बच्चा चित्रित कर सकता है। • मुहावरों का प्रयोग करके वाक्य बनाता है। • लिंग भेद करके स्त्रीलिंग व पुल्लिंग को छांटता है ।	• अपने परिवेश से ऐसी ही अन्य कहानी पता करता है। लिखता है। बताता है। कहानी के नैतिक सीख को सीख गया है।

Los - H 509, H507, H514, H512

प्रश्न पत्र ढाँचा

	FA1	SA1		FA2	SA2	
Class 1 - 2	10	30	15 Q x 2 mark = 30	10	30	15 Q x 2 mark = 30
Class 3	10	30	10 Q x 1 mark = 10	10	30	10 Q x 1 mark = 10
			10 Q x 2 marks = 20			10 Q x 2 marks = 20
Class 4 - 5	10	40	5 Q x 1 mark = 05	10	40	5 Q x 1 mark = 05
			5 Q x 2 marks = 10			5 Q x 2 marks = 10
			5 Q x 3 marks = 15			5 Q x 3 marks = 15
			2 Q x 5 marks = 10			2 Q x 5 marks = 10

प्रश्न पत्र प्रारूप (कक्षा 4 व 5)

भाग A पठन खंड – अंक 5

भाग B लेखन खंड – अंक 10

भाग C व्याकरण खंड – अंक 10

भाग D पाठ्य वस्तु खंड – अंक 15

TDM – Hindi – Class 1 & 2

	LO tagged	Competency Level योग्यता स्तर				Context प्रसंग/संदर्भ				Response type अनुक्रिया प्रकार		Types of Questions प्रश्नों के प्रकार			
		I	II	III	IV					Selected	Constructed	VSA 1 Mark	SA 2 Marks	LA 3 Marks	VLA 5 Marks
		Q	Q	Q	Q					Q	Q				
पठन			3							3			3		
लेखन			2	1							3		3		
पाठ्यपुस्तक		5	3	1						7	2		9		
Total Qs		5	8	2						10	5		15		
Total Marks		10	16	4						20	10		30		
Question-wise %		33%	53%	14%									100%		
Marks-wise		33%	53%	14%									100%		

TDM – Hindi – Class 3

	LO tagged	Competency Level योग्यता स्तर				Context प्रसंग/संदर्भ				Response type अनुक्रिया प्रकार		Types of Questions प्रश्नों के प्रकार			
		I	II	III	IV					Selected	Constructed	VSA 1 Mark	SA 2 Marks	LA 3 Marks	VLA 5 Marks
		Q	Q	Q	Q					Q	Q				
पठन			3							3		3	-		
लेखन			2	1							3	-	3		
व्याकरण			3									1	2		
पाठ्यपुस्तक		7	1	2	1					6	5	6	5		
Total Qs		7	9	3	1					9	11	10	10		
Total Marks		9	13	6	2					9	21	10	20		
Question-wise %		35%	45%	15%	5%					45%	55%	50%	50%		
Marks-wise		30%	43%	20%	7%					30%	70%	33%	67%		

TDM – Hindi – Class 4 & 5

		Competency Level योग्यता स्तर				Context प्रसंग/संदर्भ				Response type अनुक्रिया प्रकार		Types of Questions प्रश्नों के प्रकार			
पाठ का नाम	LO tagged	I	II	III	IV	व्य.	सा.	शै.	व्यव.	Selected	Constructed	VSA 1 Marks	SA 2 Marks	LA 3 Marks	VLA 5 Marks
Reading skill Section A		1	2	1	0					4	0	1	2	1	
Writing skill section B		1	1	1	0					1	2	1	1	1	
Grammar Section C		1	1	2	0					0	4	1	1	2	
Text book section D		2	1	1	2					0	6	2	1	1	2
Total Qs		5	5	5	2					5	12	5	5	5	2
Total Marks												5	10	15	10
Question-wise %															
Marks-wise															

प्रश्न कमांक 01 से 05 तक 01 अंक

प्रश्न कमांक 06 से 10 तक 2 अंक

प्रश्न कमांक 11 से 15 तक 3 अंक

प्रश्न कमांक 16 से 17 तक 5 अंक

कक्षा – 2

LO-L203 : देखी, सुनी बातों, कहानी, कविता, आदि के बारे में बातचीत करते है और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते है।

गतिविधि – 1

कक्षा 1 में आपने 'छह साल की छोकरी' कविता पढ़ी होगी इस कविता में दी गई पंक्ति को पढ़कर आगे की पंक्तियाँ पूरा करें –

छह साल की छोकरी

.....

टोकरी में आम है

.....

दिखा–दिखाकर टोकरी

.....

हमको देती आम है

.....

नाम नहीं अब पूछना

.....

अब बताओ ?

1. कविता में क्या खेलने के की बात की गई है?

2. चाबी वाले खिलौने कौन से है।

3. तुम कौन से खेल खेलना पसंद करते हो।

प्रभावी शिक्षण के लिए आईसीटी का उपयोग

आज के तकनीकी युग में अपने अधिगम को सरल बनाने में अपने चारों ओर वातावरण में उपलब्ध विभिन्न आईसीटी माध्यम जैसे इंटरनेट, क्यूआर कोड आदि का छात्र आसानी से उपयोग कर सकता है।

तकनीकी का उपयोग क्यों :–

- यह एक महत्वपूर्ण अधिगम माध्यम है जिसका उपयोग कक्षा कक्ष में अथवा बाहर कहीं भी किया जा सकता हैं।
- भाषा के अभ्यास के लिए पाठ्यपुस्तक में दी गई सामग्री के अतिरिक्त ढ़ेर सामग्री उपलब्ध होती है।
- उसी अवधारणा पर आधारित भिन्न–भिन्न प्रश्न उपलब्ध होने के कारण रुचि बढ़ती है।
- भाषा की कई अमूर्त अवधारणाओं का मूर्त रूप में प्रदर्शन रहता है जिससे अधिगम आसान होता है।
- H.O.T. प्रश्नों के लिए भी विद्यार्थी जिज्ञासु बनता है।
- भाषा की शैली का प्रदर्शन उपलब्ध रहता है, जो विद्यार्थी को नई सोच के लिए प्रेरित करता है।
- कक्षा कक्ष में यदि कुछ समझने को रह जाए तो विद्यार्थी उसे घर में अथवा बाद में भी समझ सकता है।
- संकोची विद्यार्थी जो कक्षा में अंतर्मुखी रहते हैं वे आईसीटी के माध्यम से अपनी जिज्ञासाओं को पूर्ण कर सकते हैं।

आईसीटी के उपयोग से लाभः–

- **क्यूआर कोड /दीक्षा ऐप–**

उस अवधारणा से संबंधित अन्य गतिविधियां, संबंधित अन्य प्रश्न साथ–साथ उपलब्ध होते हैं जिसे तुरंत देखा जा सकता है। मोबाइल से कुछ उपकरण जैसे आईपैड टेबलेट आदि से कक्षा कक्ष में की गई गतिविधि या अवधारणा को विश्लेषण आदि आसानी से किया जा सकता है कंप्यूटर इसकी मदद से एक ही अवधारणा से संबंधित सारे तथ्य एवं अवधारणाओं को एक ही स्थान पर संबंधित अन्य विश्लेषण समानता आदि के लिए एकत्र किया जा सकता है।

Day - 3

Transectional Pedagogy and use of Manipulatives

कक्षा में भाषाई कौशल सुनना, बोलना, पढ़ना व्याकरण, नवीन शब्दावली विकसित करने हेतु कक्षा में विभिन्न शिक्षण विधियाँ/ गतिविधियों की रचना करनी होगी।

प्रयास हो कि ये गतिविधियाँ : शिक्षण विधियां बच्चों की आयु और उनके परिवेश के अनुसार हों जैसे कहानी कविता हाव–भाव के साथ सुनाना।

बच्चों को बोलने के विविध अवसर देना जैसे कहानी, कविता, नारे आदि सुनाना भाषण देना अपने अनुभव बताना।

उन्हें आयु अनुरूप किताबें एवं अन्य पाठ्य सामग्री पढ़ने को देना।

बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर देना। ये अवसर कहानी, भाषण, कविता, पत्र, निबंध, संस्मरण आदि हो सकते हैं।

वर्तमान में बच्चों में भाषायी कौशल विकसित करने हेतु 5 E इंस्ट्रक्शनल मॉडल का उपयोग किया जा रहा है। इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

5E इंस्ट्रक्शनल मॉडल

यह मॉडल एक पाँच–चरण शिक्षण अनुक्रम का वर्णन करता है जिसका उपयोग विषय की इकाइयों और पाठों के शिक्षण के लिए किया जा सकता है।

इस मॉडल से छात्रों को अनुभवों और नए विचारों से अपनी समझ बनाने में मदद मिलती हैं। यह समस्या–समाधान आधारित शिक्षण योजना है।

Engage: एंगेज स्टेज का उद्देश्य छात्र की रुचि को समझकर उन्हें व्यक्तिगत रूप से शिक्षण योजना में शामिल करना है। इसके पहले विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान का आकलन करना जरूरी है।

EXPLORE: EXPLORE स्टेज के अंतर्गत छात्रों के समक्ष विषय से संबंधित परिस्थितियाँ/चुनौतियाँ दी जाती हैं। जिससे उन्हें विषय पर अपनी समझ बनाने का मौका मिलता है।

EXPLAIN: EXPLAIN चरण का उद्देश्य छात्रों को अवसर प्रदान करता है कि उन्होंने अब तक जो सीखा है उस पर अपनी समझ विकसित कर सकें।

EXTEND: EXTEND चरण का उद्देश्य छात्रों को अपने सीखे गए ज्ञान का उपयोग नवीन परिस्थितियों में कर सकें ।

EVALUATE: EVALUATE चरण का उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए यह निर्धारित करना है कि बच्चों ने कितना कुछ सीखा कहां उन्हें और मदद की आवश्यकता है। यह चरण remediation से संबंधित है।

Demo lesson using Manipulatives/TLM

पाठ योजना
कक्षा तीसरी

कक्षा – तीसरी **Date**.....
विषय – हिंदी
Topic – पद्य – मीठे बोल
Sub – Topic

उपविषय – लय पूर्वक कविता का वाचन, स्वाद की समझ व तुक वालें शब्दों को बता पाएंगे, तुक वाले शब्द, मौखिक प्रश्नों के उत्तर।

स्तर– 1, 2, 3, 4

लर्निंग आउट कम – 302, 303, 304

1. कहानी कविता आदि को उपयुक्त उतार–चढ़ाव, गति प्रवाह और सही पुट के साथ सुनाते है।
2. सुनी हुई रचनाओं की विषय वस्तु पर घटनाओं, पात्रों शीर्षक आदि के बारे में बात, अपनी भाषा में व्यक्त कर पाते हैं।
3. आस–पास होने वाली घटनाओं/गतिविधियों और विभिन्न अनुभवों को बता पाते है ?

बैठक व्यवस्था– अर्ध गोलाकार/ (टेबल कुर्सी जो भी संसाधन उपलब्ध होंगे)

पूर्वज्ञानः– कविता के आधार पर बच्चों से बातचीत की जायेगी।

निर्देश – कक्षा के प्रारंभ में शिक्षक कहेंगे कि आज हम एक खेल खेलते हैं–

शिक्षक (बोलेगा) पेड़ा– बच्चे बोलेगें– खा

शिक्षक (बोलेगा) पेड़– बच्चे बोलेगें – नहीं खाते

शिक्षक बच्चों से खाने वाली मिठाईयों के नाम बोलेंगे बीच–बीच में अन्य चीजों के नाम बोलेगे (बच्चे मिठाईयों के नाम जान पाएंगे)

गतिविधि– 1. शिक्षक लय के साथ कविता का वाचन करेंगे बच्चें कविता दोहरायें।

कविता– मीठा पेड़ा– मीठा खाजा, मीठा होता हलुवा ताजा

2. शिक्षक बच्चों से कविता बोलनें के लिए कहेंगे।

गृहकार्य– 1. आप जो मीठी (चीजों) वस्तुएँ खाते है उनकी सूची बनाकर लाए।

2. दो फलों के चित्र बनाकर लाए।

Step 2 -

बैठक व्यवस्था– पंक्तिबद्ध में बैठाना।

गतिविधि– निम्न शब्दों से मिलते–जुलते शब्द सोचकर लिखने देना–

न्यारें, ताजा, पके, गोल

2. पहचानकर लिखों– अलग कौन है ?

1. सेव, केला, पपीता, इमली

2. पेड़ा, गुलाब, जामुन, समोसा, जलेबी

3. सूर्य, चन्द्रमा, तारे, चिड़िया

4. कार, गिलास, स्कूटर, साइकिल

गृहकार्य– इस कविता से मिलती जुलती कोई अन्य कविता लिखकर लाना व सुनाना।

Day - 4

उपचारात्मक शिक्षण (Remediation)

विद्यार्थी की व्यक्तिगत शैक्षिक आवश्यकतानुसार सीखने–सिखाने की नई (संशोधित) रणनीति बनाकर पाठ योजना में सुधार करना।

(उपचारात्मक शिक्षण में शामिल करने के लिए पुनरीक्षित पाठयोजना को शिक्षण में दोबारा शामिल करना और छात्र से व्यक्तिगत रूप से मिलने की रणनीतियाँ)

उपचारात्मक शिक्षण प्रक्रिया (Remediation Process)

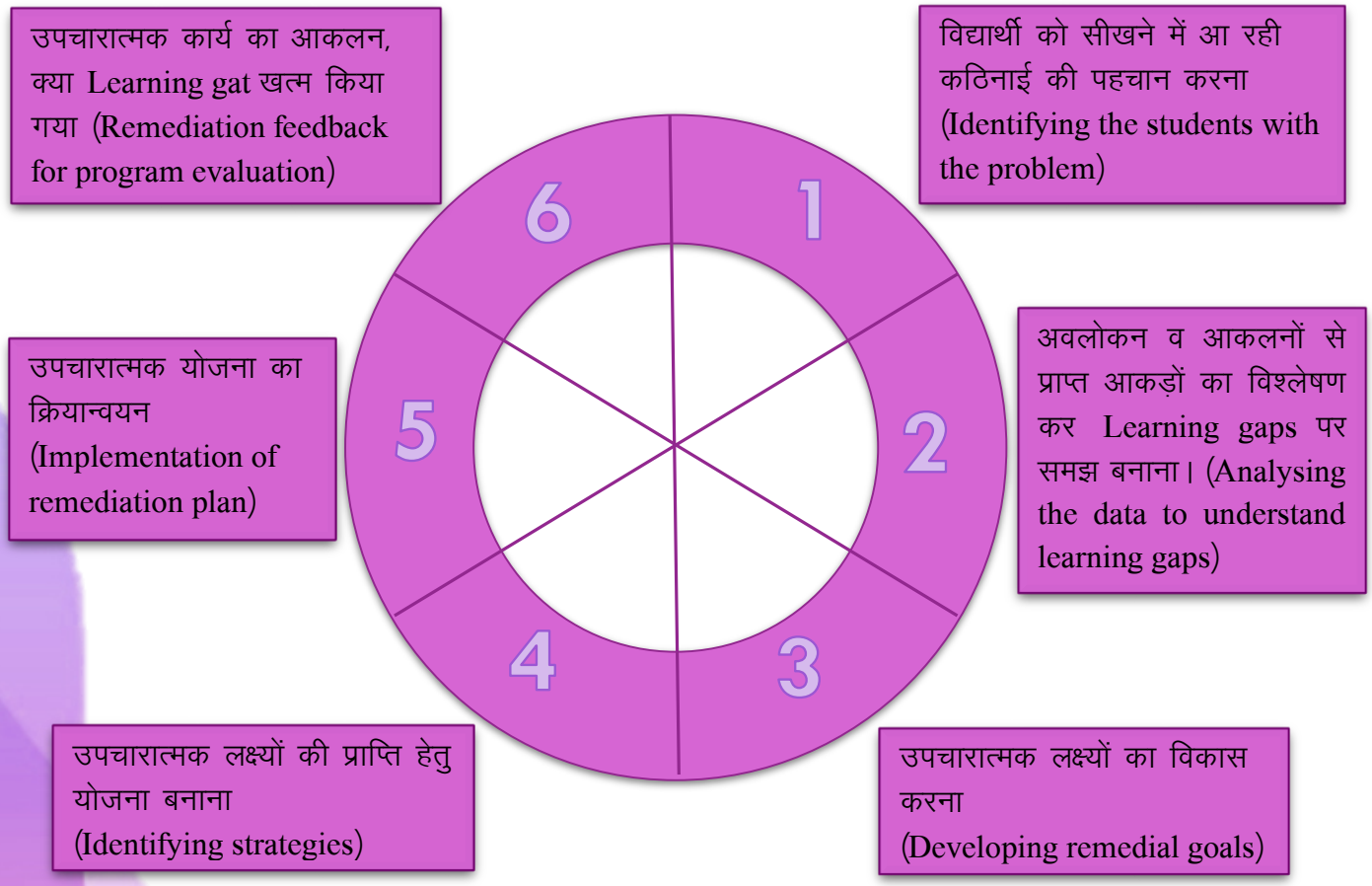

LO-L203 : देखी, सुनी बातों, कहानी, कविता, आदि के बारे में बातचीत करते है और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते है।

एफ.ए. आधारित प्रार्दश पाठ योजना

गतिविधि – 1

कविता को लय के साथ पढ़ना–

चलो खिलौने खेले हम

हाथी भालू ले ले हम

चाबी, वाले कौआ मोर

फुदक रहें चारों ओर

मोनू ने आवाज लगाई

चौकी–बेलन ले लो भाई।

जोकर वाली टोपी ले लो

खूब मजे से तुम खेलो।

निर्देश –

1. शिक्षक कक्षा को दो समूह में बाटेंगे। दोनों समूह से कविता लय के साथ बारी–बारी पढ़नें कहेंगे।
2. एक समूह के बच्चों के द्वारा कविता पठन करते समय दूसरे समूह दोहराने कहेगें।
3. बच्चों से पूछे कि आपके पास कौन–कौन से खिलौने है।
4. बच्चों से उनके पसंद के खिलौने की चित्र बनाने को कहें।
5. बच्चों से यह भी पूछें कि चाबी वाले खिलौनें एवं बिना चाबी वाले खिलौनें में कौन सा खिलौना पंसद हैं।
6. अगर खिलौनें नहीं होते तो आप किससे खेलते।
7. खिलौनों के नामों की सूची बनाने को कहें।

कला समेकित शिक्षण

गतिविधि – कक्षा – 5 (थीम पानी)

उपविषय – बारिश – (अभिनय गीत)

बैठक व्यवस्था – बच्चों को गोल घेरे में खड़ा करेंगे। तथा शिक्षक बच्चों के साथ रहकर गतिविधि करायेंगे।

निर्देश– बच्चों से कहा जाएगा गीत की एक लाइन मै बोलूंगी वैसा ही तुम भी करते जाना।

गीत–

अहा–अहा जी वर्षा आई

पानी की बौछार है लाई

चम–चम बिजली चमके रे

बादल कैसे गरजे रे

कही कोकिला बोले रे

बूदें नभ में डोले रे

अहा–अहा जी वर्षा आई

पानी की बौछार है लाई

पानी बरसा खेतों में

पानी बरसा खेतों में

उठी उमंगे लहरों में

उठी तरंगे नहरों में

अहा–अहा जी वर्षा आई।

निर्देश :– शिक्षक अभिनय के साथ गीत करवाएं एवं बच्चों से चर्चा करेगें।

गतिविधि–2 बारिश – (कैसे होती हैं)

निर्देश– 1. बच्चों से कहेंगे, आओं हम गोल घेरे में खड़े होते है, आज हम बारिश का नाटक करेंगे। हम सब खड़े होते है और एक उँगली से ताली बजाते हुए ध्वनि निकालते हैं फिर दो अंगुलयों, तीन अंगुलियों, चार अंगुलियों के साथ–समन्वयक एक प्रकार की ताली से दूसरी प्रकार की ताली को बजाने के लिए निर्देश देगा और (प्रतिभागी) बच्चे वैसा ही करेंगे।

2. अब हम आँखें बंद करके इस अनुभव को दोहराएगे उन्हे एक उँगली से पाँच तक और पाँच से एक तक ले जाते हुए इससे हल्की से तेज बारिश की आवाज उत्पन्न होगी और फिर तेज बारिश से हल्की बारिश की आवाज पैदा होगी।

आकलनः– बच्चों से चर्चा करें।

1. पानी गिरने की आवाज आई क्या ?
2. आवाज कैसी लगी।
3. बारिश में भीगने पर कैसा लगता है क्या आप पानी में कभी भीगते हैं।
4. अन्य चर्चा शिक्षक कक्षा में कर सकते हैं।

शिक्षक के रूप में मूल्यांकन–

1. उनके बारिश से संबंधित अनुभवों का पता लगाएँगें और उन विषयों के साथ जोड़ने की कोशिश करें जिनके बारे में वे पता लगाने, कल्पना करने, विचार साझा करने और एक दूसरे के अनुभवों को सुनना।
2. उद्देश्य यह कि उत्तरों के लिए उनके प्रयासों को प्रोत्साहित करें और उनकी सराहना करें।
3. उनके अनुभवों का वर्णन करने के लिए शब्दावली और संचार कौशल के उपयोग का मूल्यांकन कर सकते हैं।
4. क्या आपको लगता कि पानी हमारे जीवन या पृथ्वी पर जो जीवन हैं, उसे

प्रभावित कर सकता है शिक्षक बच्चों से गंदा पानी–साफ पानी, पानी का रंग, पानी के स्त्रोत, पानी के उपयोग, पानी का महत्व आदि पर बच्चों से बातचीत करते हुए, उन्हें अन्य विषय जैसे विज्ञान, सा.विज्ञान, भाषा की कक्षा में सम्मिलित कर सकते हैं।

प्राथमिक कक्षा

1. कारणों के साथ प्रक्रियाओं और तथ्यों को मिलाता हैं– उदाहरण के लिए हम इन गतिविधियों जैसे हवा में प्रदूषण फैलाने वालों की उपस्थिति के साथ, धुंध का छा जाना, जल स्तर में कमी, आदि को सम्मिलित कर सकते हैं।
2. रोजमर्रा के जीवन में वैज्ञानिक अवधारणों को प्रयोग में लाता है जैसे– जल का शुद्धिकरण/उपयोग के लिए प्रदूषित जल का प्रबंध, पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रयास करता है नियंत्रित ढंग से प्रयोग करते हुए पर्यावरण के खतरों आदि से निपटने के उपाय सुझायें।

शिक्षक– भाषा की गतिविधियाँ करने वाले के लिए '**दीक्षा एप**' से '**क्यू आर कोड**' भी गतिविधियाँ सम्मिलित कर सकते हैं।

कला की अवधारणाएँ

कला जीवन में किसी वस्तु को सुंदर, आकर्षक या चमत्कारिक रूप में प्रस्तुत करने का ढंग है। यहां पर वस्तु के अर्न्तगत कला के समस्त विषयों के वर्ग सम्मिलित किए जाते है इसके अन्तर्गत कोई पदार्थ, मानव, निर्मित वस्तुएँ कोई घटना, विचार, भाव आदि का कोई रूप हो सकता है।

कला का सौन्दर्य सदैव उन्नतिशील एवं सृजन का माप लिए होता है सृजन विकास की प्रथम सीढ़ी है। कला शिक्षण की सफलता बालक को उसके मुक्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करने में है। चाहे वह संगीत कला, नृत्य कला, चित्रकला, नाट्य कला आदि कलाएँ क्यों न हो। जब तक बालक अपनी बात स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त नहीं करेंगा तब तक उसकी प्रतिभा उजागर नही हो पाएगी बालक कल्पनाओं के आधार पर अपने मानसिक विकास के सहारे अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता है, इस अभिव्यक्ति में आत्मप्रदर्शन का प्रमुख स्थान होता है। अध्यापन में बालकों को इतनी स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह अपनी भावनाओं को स्वतंत्रता पूर्वक अपनी रूचिकर शैली में अभिव्यक्त कर सकें। विद्यालय में बालक खेल–खेल में विभिन्न प्रकार की कलाकृति बनातें है यह कला कलाकृतियां उनके दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित होती है। कला शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष बालक के विचारों, अनुभवों को जानने की प्रक्रिया है।

कला का उद्देश्य–

प्राथमिक स्तर कला का उद्देश्य

1. स्कूली जीवन में कला गतिविधियों को समाहित करने में शिक्षकों को मदद करना है।
2. यह बच्चों को अपनी भावनाएं व्यक्त करने अपने विचारों की पड़ताल करने, अवलोकन को दर्ज करने तथा सामग्री व उपकरणों का सीधा अनुभव करने के अवसर प्रदान करता है।

बहुत सी गतिविधियों की शुरूआत बच्चों को अपनी इन्द्रियों के प्रति अधिक जागरूक करने में मदद मिलती है। इन्द्रियां रेखा और रंग, कला और वातावरण, कला व गणित, तथा कला व भाषा, का प्रमुख हिस्सा है।

उपचारात्मक योजना (Remediation Plan)

विद्यार्थी .....

शिक्षक .....

कोर्स ..... तारीख .....

विषय / प्रोजेक्ट .....

समस्या	समस्या का हल	आवश्यक संसाधन

Day - 5

चित्ताकर्षण (Ice Breaker)

सम्मिलित प्रतिभागियों में से किसी एक विकासखण्ड के शिक्षक समूह से उनके क्षेत्र विशेष के विशेषता के बारे में चर्चा करने हेतु कहा जाएगा।

कक्षा में पढ़ाने के पूर्व तैयारी आवश्यक है। क्या पढ़ाना है?, क्यों पढ़ाना है?, कैसे पढ़ाना है? (गतिविधि, TLM - Teaching Learning Material, शिक्षण, विधि) विद्यार्थियों की सहभागिता कैसे सुनिश्चित करेंगे? कैसे मालूम करेंगे कि सीखना पूरा हो रहा है। इन सारी प्रक्रियाओं को एक साथ प्रदर्शित करना चाहे तो तस्वीर कुछ इस प्रकार बनती है।

मूल्यांकन, सीखने के प्रतिफल और शिक्षण गतिविधियों के बीच संबंध :

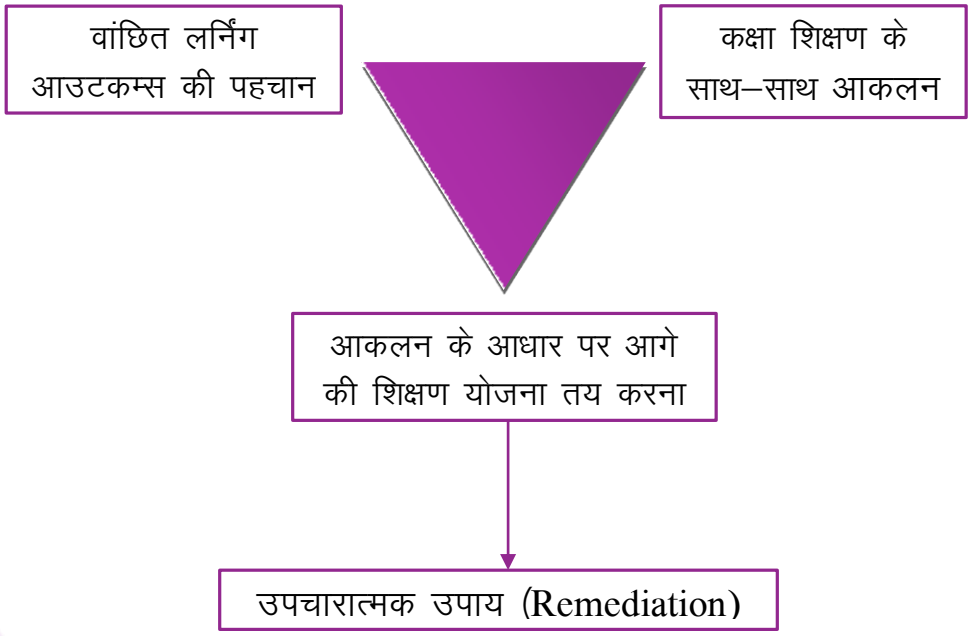

कक्षा शिक्षण के साथ–साथ आकलन करते जाना और यह पहचान करना कि किस बच्चे ने कितना सीखा और कहाँ उसे सहायता की जरूरत है, कब–कहाँ और कैसे उसे सहायता दी जावेगी ये सारे बिन्दु शिक्षण योजना (Teaching Plan) के भाग होते हैं।

पाठ योजना

कक्षा	.....	दिनांक	.....
विषय	.....	कालांश	.....
शीर्षक	.....		
उपशीर्षक / प्रकरण	.....		

1. अधिगम प्रतिफल :

स्तर 1 .....

स्तर 2 .....

स्तर 3 .....

स्तर 4 .....

2. शिक्षण सहायक सामग्री

3. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

a. गतिविधि

पूर्व ज्ञान

विषय से संबद्धता

b. शिक्षण अधिगम प्रविधियाँ

c. बैठने की व्यवस्थाः व्यक्तिगत / जोड़ी / साझा / समूह

d. कक्षा / बाहर / प्रयोगशाला / कोई अन्य (निर्दिष्ट)

4. आकलन –

5. सारकथन / पुनर्कथन -

6. प्रदत्त कार्य –

7. पाठ योजना के प्रभाव का शिक्षक द्वारा समीक्षा –

Low performing LOs पर आधारित गतिविधियाँ

निर्देश :

1. कक्षा 1 से 5 तक की गतिविधियाँ लर्निंग आउट्कम्स को ध्यान में रखकर तैयार की गई है।
2. शिक्षक कक्षा में बच्चों के स्तर और समूह में गतिविधियों का आयोजन कराएंगे।
3. गतिविधियों को कराने से पूर्व शिक्षक बच्चों को एक बार गतिविधि की आवश्यकतानुसार जानकारी/विवरण देंगे ताकि गतिविधियाँ स्वयं करने में किसी प्रकार का संदेह न हो।

कक्षा – 1

LO-L102 : सुनी सामग्री (कहानी, कविता आदि) के बारे में बातचीत करते है अपनी राय देते है प्रश्न पूछते है।

गतिविधि – 1

तुमने **"पैसा पास होते तो चार चनें लाते"** कविता पढ़ी होगी इस कविता में कौन–कौन से शब्द आए है उसे लिखों (किताब देखकर भी लिख सकते हो)

गतिविधि – 2

फल वाले चित्र पर (✓) का निशान लगाओ–

गतिविधि – 3

चित्र बनाओ –

घर का चित्र बनाओ

पेड़ का चित्र बनाओ

LOs-L109 : अपनें नाम को पहचानते है जैसे मेरा नाम विमला है बताओं यह कहाँ लिखा है। इसमें नाम कहाँ लिखा हुआ है। नाम में म पर अंगुली रखों।

गतिविधि – 1

मेरा नाम मीना है, इसमें म वर्ण से बनने वाले अन्य नाम को लिखो ?

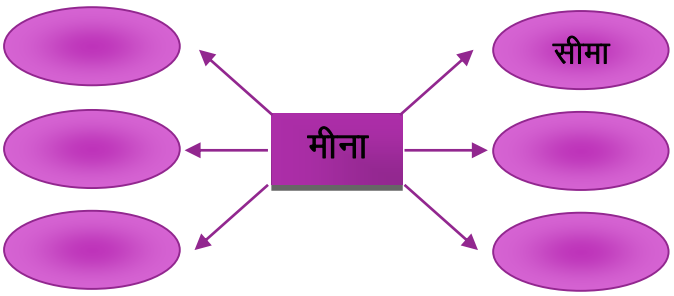

गतिविधि – 2

समान ध्वनि वाले शब्दों को छाँटकर गोले में लिखो।

निमा, रीमा, फल, सभा कर, कमा मन वीमा रीमा

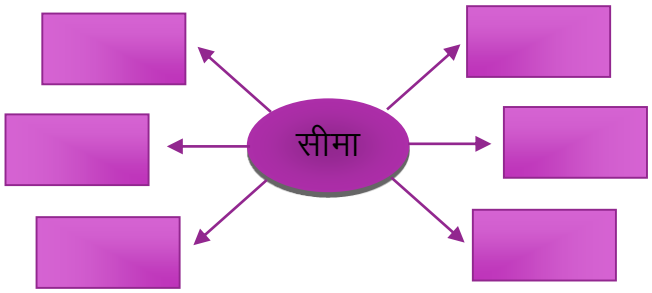

गतिविधि – 3

समान ध्वनि वालें शब्दों की जोड़ी बनाओ –

आलू	काम
आम	मोटा
रोता	कालू
छोटा	सोता

LO-L108 : संदर्भ की मदद से आस–पास मौजूद प्रिंट के अर्थ और उद्देश्य का अनुमान लगाते है जैसे टॉफी के कंवर पर लिखे नाम को टॉफी लाली पॉप, या चाकलेट बताना।

गतिविधि – 1

गतिविधि – नीचे दिए गए चित्रों को पहचान कर नाम लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

गतिविधि – 2

चित्रों को पहचान कर शब्द पूरा करो।

खे.....ना

पढ़.....

.....रना

गतिविधि – 3

चित्र पहचानकर शब्दों से मिलान करें–

हवाई जहाज

पेड़

बस

झूला

गतिविधि

कक्षा– पाँचवी

LO 506 : विभिन्न स्थितियाँ और उद्देश्यों बुलेटिन पर लगाई जाने वाली सूचना कार्यक्रम की रिपोर्ट जानकारी आदि प्राप्त करने के लिए पढ़ते और लिखते है।

गतिविधि –

अपनी शाला में आयोजित होने वाले किसी एक कार्यक्रम के बारे में निम्न बिन्दुओ में लिखो ?

1. कार्यक्रम का नाम
2. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि
3. कार्यक्रम में कौन–कौन सी गतिविधियाँ (प्रोग्राम) आयोजित की गयी थी ?
4. क्या तुमनें इस कार्यक्रम में अपनी सहभामिता दी ? हाँ तो कैसे ?

निर्देश –

1. शिक्षक शाला में आयोजित कार्यक्रम के आधार पर बच्चों से चर्चा करेंगे।
2. शिक्षक यह सुनिश्चित करेंगे कि गतिविधि में प्रत्येक बच्चों की सहभागिता रहें।

गतिविधि – 2

तुम्हारे घर के आस–पास कौन–कौन से लोग सामान बेचने आते है? बताओ।

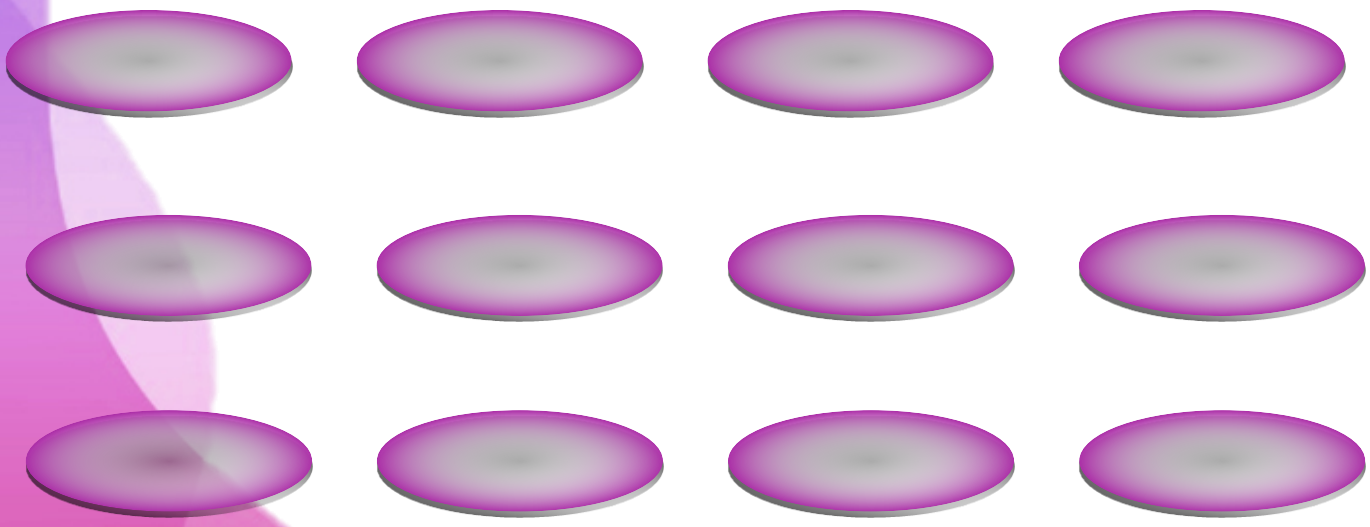

गतिविधि – 3

दिए गए चित्र के संबंध में पाँच बातें लिखो –

.....

.....

.....

.....

.....

कक्षा – 3

LO-L303 : सुनी हुई रचनाओं की विषय–वस्तु घटनाओं, पात्रों शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते है, प्रश्न पूछते है अपनी प्रतिक्रिया देते है, राय बताते है। अपने तरीके से (कहानी कविता आदि) अपनी भाषा में व्यक्त करते है।

गतिविधि – 1

तुमने **बंदर बाँट** वाली कहानी तो अवश्य पढ़ी होगी। निम्न बिंदुओं पर अपनी बात बताओ –

1. इस कहानी के पात्र कौन–कौन है ?

.....

2. बंदर ने बाँटने के लिए किस सामग्री का उपयोग किया है ?

.....

3. तुम्हें कौन सा पात्र अच्छा लगा और क्यों ?

.....

4. तुम्हें तराजू बनाने को कहा जाए तो तुम किन–किन सामग्री का उपयोग करोगे ?

.....

गतिविधि – 2

तुमने जो भी कहानी पढ़ी या सुनी होगी उसके बारे में दिए गए बिन्दुओं के आधार पर लिखो ?

1. कहानी का शीर्षक

.....

2. कहानी के मुख्य पात्र कौन है?

.....

3. कहानी से क्या सीख ली?

.....

गतिविधि – 3

आपने कक्षा 2 में कविता पढ़ी होगी उसमें से आपको कौन–सी कविता अच्छी लगी और क्यो ?

1. कविता की पंक्ति

.....

2. क्यों अच्छी लगी ?

.....

.....

LO-S309 – स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय–गतिविधि के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व नियंत्रित लेखन (कनवैशनल राइटिंग) करते है।

गतिविधि – 1

शेर और हाथी इसमें कई अंतर होते है सोचकर दिए गए कॉलम में लिखो–

	शेर	हाथी
भोजन		
आवास		
रंग		
आवाज		
आदत		

गतिविधि – 2

आपकी माँ घर पर क्या–क्या काम करती है सोच कर बताएं/लिखे।

.....

.....

.....

.....

गतिविधि – 3

दी गई कहानी पढ़ कर निम्न बिन्दुओं का उत्तर बताओ –

कहानी

एक नदी में छोटी–छोटी मछलियाँ खुशी–खुशी रहती थी एक दिन वहाँ एक बड़ी मछली आ गई। वह रोज उन मछलियों को खाने लगी। सभी मछलियाँ बहुत दुखी हो गई। एक छोटी नन्ही मछली ने बड़ी मछली से बचने की एक तरकीब सुनाई। उन सबने मिलकर मछली को डराने के लिए एक बड़ी सी मछली का आकार बनाया। मछलियों की तरकीब सफल हो गई बड़ी मछली डरकर भाग गई। सभी मछलियाँ खुशी–खुशी फिर से नदी में रहने लगी।

1. इस कहानी का शीर्षक

.....

2. मुख्य पात्र

.....

3. सफलता कैसे मिली

.....

4. क्या सीख मिली

.....

LO-L312 : अलग–अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, वाल, पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझ कर पढ़ने के बाद उस पर अपनी प्रतिक्रिया लिखते है पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (लिखित/ब्रेललिपि आदि में) देते है।

गतिविधि – 1

दी गई कहानी को पूरा करो ?

नदी किनारे एक पीपल का पेड़ था। पेड पर एक कौआ रोज आकर बैठता था। .....

.....

.....

गतिविधि – 2

दिए गए चित्र को देखिए एवं इस पर पाँच वाक्य लिखिए –

1. .....

2. .....

3. .....

4. .....

5. .....

गतिविधि – 3

चित्र को देखकर अपने मन में उठ रहें भावों को लिखिए।

कक्षा – 4

LO-L401 : दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते है और प्रश्न पूछते है।

गतिविधि – 1

नीचे लिखे वाक्यों को अपने साथी से बिना बोले समझाओं और उसे अपनी मातृ भाषा में लिखने को कहो। क्या वह तुम्हारी बात समझा हैं।

1. हम खेलने कब जायेंगे ?
2. मुझे आज बुखार है ?
3. यह सेव बहुत मीठा है।
4. मेरे साथ मेला/पार्क घूमने जाओंगे ?

गतिविधि – 2

तुमने जो भी कहानी, पढ़ी या सुनी होगी उसके बारे में दिए गए बिन्दुओं के आधार पर लिखो।

1. कहानी का शीर्षक।

   .....

2. कहानी का मुख्य पात्र।

   .....

3. कहानी तुम्हें क्या अच्छी लगी ?

   .....

   .....

4. कहानी का कौन सा पात्र तुम्हें अच्छा लगा ?

   .....

5. कहानी का निष्कर्ष–

   .....

   .....

गतिविधि – 3

''मेरी अभिलाषा'' पाठ से प्रेरित होकर आप बड़े होकर क्या बनना चाहोंगे और क्यों ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

LO- 413 – किसी विषय पर लिखते हुए शब्दों के बारीक अंतर को समझते हुए सराहते हैं और शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए लिखते है

गतिविधि – 1

छत्तीसगढ़ के किसी एक दर्शनीय स्थल का वर्णन निम्न बिन्दुओं में करो –

1. स्थान का नाम
2. कहाँ स्थित है?
3. मुख्यालय से दूरी
4. क्या विशेषता है ?
5. उस स्थान तक कैसे जाया जा सकता है?

गतिविधि – 2

तुम कौन–कौन से त्यौहार मनाते हो उनके बारे में तालिका में लिखो ?

क्रमांक	त्यौहार का नाम	त्यौहार में क्या–क्या करते हो
1		
2		

गतिविधि – 3

रोशनी देने वाली कौन–सी चीजों का उपयोग करते हो? उनके चित्र बनाओ ?

LO-L416 : अलग–अलग तरह की रचनाओं में आए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका लेखन में इस्तेमाल करते है।

गतिविधि – 1

नीचे एक शेर का चित्र दिया गया है, इसके आधार पर कहानी लिखो ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

गतिविधि – 2

निम्न लिखित दिए गये बिन्दुओं के आधार पर किसी एक के बारे में लिखो ?

- बरसात,
- हमारा घर,
- हमारी पाठशाला

गतिविधि – 3

आपने कक्षा 2/3 में कोई कविता पढ़ी होगी, किसी एक कविता को लिखो ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

कक्षा – 5

LO-L501 : सुनी अथवा पढ़ी, रचनाओं (हास्य सामाजिक, आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि विषय वस्तु, घटनाओं चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते है प्रश्न पूछते हैं, अपनी स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं।

गतिविधि – 1

अपनी पाठ्य पुस्तक की कोई कहानी पढ़कर या दादी, नानी से जो कहानी सुनी हो निम्न लिखित बिन्दुओं में लिखो।

1. कहानी का शीर्षक
2. कहानी के मुख्य पात्र
3. कहानी की विषय वस्तु
4. कहानी का घटनाक्रम

गतिविधि – 2

अपनी पाठ्य पुस्तक पर आधारित या अपनी मनपंसद कविता की पंक्ति लिखो।

गतिविधि – 3

आपकी शाला में बाल मेला/सांस्कृतिक या क्रार्यक्रम का आयोजन हुआ होगा। उस समारोह के बारे में क्या–क्या हुआ लिखे।

LO-L506 : अपनी पाठ्य पुस्तक से आसपास की सामग्री, विज्ञापन, (अखबार, बाल पत्रिका) को समझते हुए बताते है।

गतिविधि – 1

स्वच्छ सुंदर गांव/शहर हमारा, इसका क्या आशय है ?

.....

.....

.....

गतिविधि – 2

स्वच्छ भारत मिशन क्यों चालू किया गया है इसकी सफलता के लिए तुम क्या–क्या कर सकते हो?

.....

.....

.....

गतिविधि – 3

अपनी शाला परिसर को स्वच्छ साफ रखने के लिए तुम किसका सहयोग लेना चाहोगे और क्या–क्या उपाय करोंगे ?

.....

.....

.....

LO-L517 : अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिखते है, कहानी, कविता, आगे बढ़ाते हुए लिखते है।

गतिविधि – 1

दिए गए चित्र के आधार पर कहानी लिखो ?

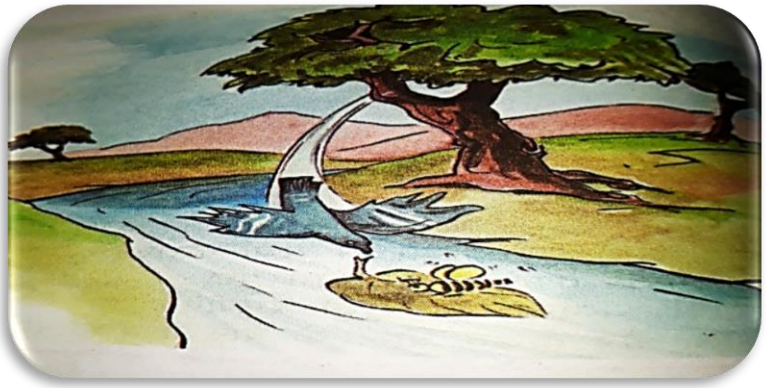

गतिविधि – 2

दिए गए चित्र से संबंधित कोई कविता लिखो ?

गतिविधि – 3

इसके आगे की पंति पूरा करें –

मै अमीर शहीदों का चारण, उनके यश गाया करता हूँ

.....

.....

.....

LO-L513 : स्वरानुसार अन्य विषयों व्यवसायों कलाओं आदि जैसे गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझते है और संदर्भ व लेखन का इस्तेमाल करते है।

गतिविधि – 1

गोले में दिए गए विषय से संबंधित अन्य शब्दों को गोलों में लिखो ।

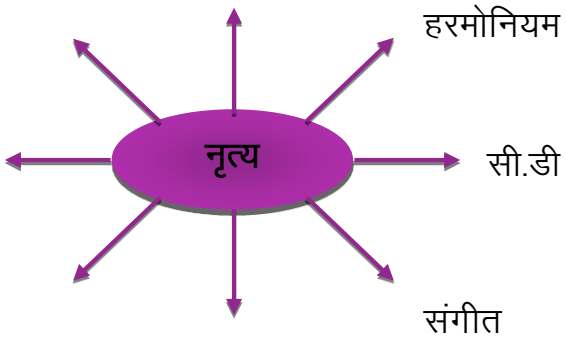

इसी तरह शिक्षक अन्य थीम पर कार्य करा सकते हैं।

गतिविधि – 2

यह चित्र किससे संबंधित है ? इसके बारे में पाँच वाक्य लिखें ?

1. .....

2. .....

3. .....

4. .....

5. .....

गतिविधि – 3

नीचे दिए गए चित्रों को देखों और तालिका में छाँटकर लिखो –

क्रमांक	लकड़ी से बनी चीजें	धातु से बनी चीजें	प्लास्टिक से बनी चीजें	कागज से बनी चीजें

परिशिष्ट

Learning Outcomes Class 1 to 5 Hindi

L101	विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं; जैसे- कविता, कहानी, सुनाना, जानकारी के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना।
L102	सुनी सामग्री (कहानी, कविता आदि) के बारे में बातचीत करते हैं, अपनी राय देते हैं, प्रश्न पूछते है।
L103	भाषा में निहित ध्वनियों और शब्दों के साथ खेलने का आनन्द लेते हैं; जैसे - इन्ना, बिन्ना, तिन्ना।
L104	प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) और गैर-प्रिंट सामग्री (जैसे- चित्र या अन्य ग्राफिक्स) में अन्तर करते हैं।
L105	चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते है।
L106	चित्र में या क्रमवार सजाए चित्रों में घट रही अलग-अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं।
L107	पढ़ी कहानी, कविताओं आदि में लिपि चिह्नों/षब्दों/वाक्यों आदि को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर, समझकर उनकी पहचान करते हैं
L108	संदर्भ की मदद से आस-पास मौजूद प्रिंट के अर्थ और उद्देष्य का अनुमान लगाते हैं, जैसे -टॉफ़ी के कवर पर लिखे नाम को 'टॉफी', 'लॉलीपॉप' या 'चॉकलेट' बताना।
L109	प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों को पहचानते हैं, जैसे - 'मेरा नाम विमला है। 'बताओ, यह कहाँ लिखा हुआ है? / इसमें 'नाम' कहाँ लिखा हुआ है? 'नाम' में में 'म' पर अँगुली रखो।
L110	परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री (जैसे - मिड-डे मीड का चार्ट, अपना नाम, कक्षा का नाम, मनपसन्द किताब का शीर्षक आदि) में रूचि दिखाते हैं, बातचीत करते हैं और अर्थ का खोज में विविध प्रकार की युक्तियों का इस्तेमाल करते है जैसे केवल चित्रों या चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुप्रास लगाना, अक्षर ध्वनि संबंध का इस्तेमाल करना, शब्दों को पहचानना, पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना।
L111	हिन्दी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।
L112	स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पंसद की किताबों को स्वयं चुनते हैं और पढ़ने की कोषिष करते हैं।
L113	लिखना सीखने की प्रक्रिया के दौरान अपने विकासात्मक स्तर के अनुसार चित्रों, आड़ी-तिरछी रेखाओं (कीरम-काटे), अक्षर-आकृतियों, स्व-वर्तनी (इनवेंटिड स्पैलिंग) और स्व-नियत्रित लेखन (कनवेंषनल राइटिंग) के माध्यम से सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपनी तरीके से लिखने का प्रयास करते हैं।
L114	स्वयं बनाए गए चित्रों के नाम लिखते (लेबलिंग) हैं, जैसे-हाथ के बने पंखे का चित्र बनाकर उसके नीचे 'बीजना' ;ब्रजभाषा, जो कि बच्चे की घर की भाषा हो सकती है।) लिखना।
L201	विविध् उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा / और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे- जानकारी पाने के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना, अपना तर्क देना आदि।
L202	कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से सुनकर अपनी भाषा में बताते/सुनाते हैं।
L203	देखी, सुनी बातों, कहानी, कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
L204	अपनी निजी ज़िंदगी और परिवेश पर आधरित अनुभवों को सुनायी जा रही सामग्री; जैसे- कविता, कहानी, पोस्टर, विज्ञापन आदि से जोड़ते हुए बातचीत में शामिल करते हैं।
L205	भाषा में निहित शब्दों और ध्वनियों के साथ खेल काम जा लेते हुए लय और तुकवाले शब्द बनाते हैं जैसे -एक था पहाड़, उसका भाई था दहाड़, दोनों गए खेलने ....।
L206	अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि कहते/ सुनाते हैं / आगे बढ़ाते हैं।
L207	अपने स्तर और पसंद के अनुसार कहानी, कविता, चित्रा, पोस्टर आदि को आनंद के साथ पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं।
L208	चित्रा के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते हैं।

L209	चित्रा में या क्रमवार सजाए चित्रों में घट रही अलग-अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्रा में देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं।
L210	परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री में रुचि दिखाते हैं और अर्थ की खोज में विविध्प्रकार की युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं जैसे- चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना, अक्षर-ध्वनि संबंध्का इस्तेमाल करना, शब्दों , पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना।
L211	प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों की अवधरणा को समझते हैं, जैसे- 'मेरा नाम विमला है।'बताओ, इस वाक्य में कितने शब्द हैं?/ 'नाम'शब्द में कितने अक्षर हैं या 'नाम'शब्द में कौन-कौन से अक्षर हैं?
L212	हिंदी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।
L213	स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना / पुस्तकालय से) अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ने का प्रयास करते हैं।
L214	स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविध्के अंतर्गत चित्रों, आड़ी-तिरछी रेखाओं (कीरम-काटे) अक्षर-आकृतियों से आगे बढ़ते हुए स्व-वर्तनी का उपयोग और स्व-नियंत्रित लेखन (कनवैंनशनल राइटिंग) करते हैं।
L215	सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से और तरह-तरह से चित्रों/शब्दों/वाक्यों द्वारा (लिखित रूप से) अभिव्यक्त करते हैं।
L216	अपनी निजी ज़िंदगी और परिवेश पर आधरित अनुभवों को अपने लेखन में शामिल करते हैं।
L217	अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि आगे बढ़ाते हैं।
L301	कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से समझते हुए सुनते और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
L302	कहानी, कविता आदि को उपयुक्त उतार-चढ़ाव, गति, प्रवाह और सही पुट के साथ सुनाते हैं।
L303	सुनी हुई रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, राय बताते हैं / अपने तरीके से (कहानी, कविता आदि) अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं।
L304	आस-पास होने वाली गतिविध्यिों/ घटनाओं और विभिन्न स्थितियों में हुए अपने अनुभवों के बारे में बताते, बातचीत करते और प्रश्न पूछते हैं।
L305	कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को समझते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं।
L306	अलग-अलग की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधरित प्रश्न पूछते हैं,अपनी राय देते हैं, शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करतेहैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (मौखिक/लिखित रूप) से देते हैं
L307	अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझ कर उनका अर्थ सुनिश्चित करते हैं।
L308	तरह-तरह की कहानियों, कविताओं/रचनाओं की भाषा की बारीकियों(जैसे-शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा, सर्वनाम, विभिन्न विराम-चिह्नों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग करते हैं।
L309	स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविध्के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व-नियंत्रित लेखन (कनवैंशनल राइटिंग) करते हैं।
L310	विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में शब्दों के चुनाव, वाक्य संरचना और लेखन के स्वरूप (जैसे- दोस्त को पत्र लिखना, पत्रिका के संपादक को पत्र लिखना) को लेकर निर्णय लेते हुए लिखते हैं।
L311	विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम-चिह्नों, जैसे -पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्न वाचक चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।
L312	अलग-अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर अपनी प्रतिक्रिया लिखते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (लिखित/ब्रेललिपि आदि में) देते हैं।
L401	दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते और प्रश्न पूछते हैं।
L402	सुनी रचनाओं की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, अपनी बात के लिए तर्क देते हैं।
L403	कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को अपनी तरह से अपनी भाषा में कहते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं।
L404	भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते और उसका इस्तेमाल करते हैं।
L405	विविध प्रकार की सामग्री (जैसे समाचार पत्रा के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिका आदि) में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील बिंदुओं को समझते और उन पर चर्चा करते हैं।
L406	पढ़ी हुई सामग्री और निजी अनुभवों को जोड़ते हुए उनसे उभरी संवेदनाओं और विचारोंकी (मौखिक/लिखित) अभिव्यक्ति करते हैं।
L407	अपनी पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री, बाल साहित्य, समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक (बाल पत्रिका) होर्डिंग्स आदि को समझ कर पढ़ते हैं।
L408	अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थग्रहण करते हैं।
L409	पढ़ने के प्रति उत्सुक रहते हैं और पुस्तक कोना /पुस्तकालय से अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ते हैं।

L410	पढ़ी रचनाओं की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं/ प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, अपनी बात के लिए तर्क देते हैं।
L411	स्तरानुसार अन्य विषयों व्यवसायों, कलाओं आदि जैसे- गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्साआदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दा व ली की सराहना करते हैं।
L412	भाषा की बारीकियों, जैसे- शब्दों की पुनरावृत्ति, सर्वनाम, विशेषण, जेंडर, वचन आदि के प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं।
L413	किसी विषय पर लिखते हुए शब्दों के बारीक अंतर को समझते हुए और सराहते हैं और शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए लिखते हैं।
L414	विभिन्न स्थितियों और उद्देश्यों (बुलेटिन बोर्ड पर लगाई जाने वाली सूचना, सामान की सूची, कविता, कहानी, चिट्ठी, आदि) के अनुसार लिखते हैं। स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जाँचते हैं और लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं।
L415	स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जाँचते हैं और लेखन के उद्देष्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं।
L416	अलग-अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझ कर उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं।
L417	विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम-चिह्नों, जैसे-पूर्ण विराम, अल्पविराम, प्रश्नवाचक चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।
L418	अपनी कल्पना से कहानी, कविता, वर्णन आदि लिखते हुए भाषा का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं।
L501	सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधरित कहानी, कविता आदि) की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करतेहैं/ प्रश्न पूछतेहैं/ अपनी स्वतंत्रा टिप्पणी देतेहैं /अपनी बात के लिए तर्क देतेहैं/ निष्कर्ष निकालते हैं।
L502	अपने आस-पास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर मौखिक रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/ प्रश्न पूछते हैं।
L503	भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी (मौखिक) भाषा गढ़ते हैं
L504	विविध प्रकार की सामग्री (अखबार, बाल साहित्य, पोस्टर आदिद्) में आए संवेदनशील बिंदुओं पर (मौखिक/लिखित) अभिव्यक्ति करते हैं, जैसे-'ईदगाह कहानी पढ़ने के बाद बच्चा कहता है-मैं भी अपनी दादी की खाना बनाने में मदद करता हूँ।
L505	विभिन्न स्थितियों और उद्देश्यों (बुलेटिन पर लगाई जाने वाली सूचना, कार्यक्रम की रिपोर्ट, जानकारी आदि प्राप्त करने के लिए) के लिए पढ़ते और लिखते हैं।
L506	अपनी पाठ्य पुस्तक से इतर सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझते हुए पढ़ते और उसके बारे में बताते हैं।
L507	सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं(हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधरित कहानी, कविता आदि) की विषय-वस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं / प्रश्न पूछते हैं / अपनी स्वतंत्र टिप्पणी देते हैं/ अपनी बात के लिए तर्क देते हैं/ निष्कर्ष निकालते हैं।
L508	अपरिचित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजते हैं।
L509	(स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविध्के अंतर्गत लेखन की प्रक्रिया की बेहतर समझ के साथ अपने लेखन को जाँचते हैं और लेखन के उद्देश्य और पाठक के अनुसार लेखन में बदलाव करते हैं।) जैसे- किसी घटना की जानकारी के बोर में बताने के लिए स्कूल की भित्ति पत्रिका के लिए लिखना और किसी दोस्त को पत्र लिखना।
L510	भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते हैं और उसे अपने लेखन/ब्रेल में शामिल करते हैं।
L511	भाषा की व्याकरणिक इकाइयों, जैसे- कारक-चिह्न, क्रिया, काल, विलोम आदि) की पहचान करते हैं और उनके प्रति सचेत रहत हुए लिखते हैं।
L512	विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम-चिह्नों, जैसे -पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्न वाचक चिह्न, उद्धरण चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।
L513	स्तरानुसार अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि (जैसे- गणित, विज्ञान सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझते हैं और संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार उनका लेखन में इस्तेमाल करते हैं।
L514	अपने आस-पास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर लिखित रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।
L515	उद्देश्य और संदर्भ के अनुसार शब्दों, वाक्यों, विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग करते हुए लिखते हैं।
L516	पाठ्य पुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए संवेदनशील बिंदुओं पर लिखित/ब्रेललिपि में अभिव्यक्ति करते हैं।
L517	अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिखते हैं, कविता, कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं।

बढ़ते कदम
आकलन से शैक्षिक गुणवत्ता की ओर...

समरूपता, वैधता, विश्वसनीयता

एस. एल. ए. आंकड़ों में

43,824 स्कूल
कक्षा – 1 से 8
विषय – समस्त
28,93,738 विद्यार्थी
उत्तर पुस्तिका – 1.41 करोड़

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद छत्तीसगढ़